सत्यसुकृत, आदि अदली, अजर, अचिन्त, पुरुष मुनीन्द्र, करुणामय, कबीर, सुरती योग, संतायन, धनी, धर्मदास, चूरामणिनाम, सुदर्शन नाम, कुलपति नाम, प्रमोध, गुरुबालापुरी, केवल नाम, अमोल नाम, सुरतिसनेही नाम, हक्क नाम, पाकनाम, प्रगट नाम, धीरज नाम, उग्रनाम, दयानामकी दया, वंश व्यालीसकी दया

अथ अम्बुसागर प्रारम्भः

★

अथ प्रथमस्तरंगः

अघासुर युगकी कथा वर्णन

मंगलाचरण

छन्द-आदि ब्रह्म अनादि अकल अभेद अवर्न आगरं ॥
सर्व व्यापक आर्य वीरज आनन्द धामी सागरं ॥
तुव चरण रवि परकाश अविचल सकल कलि कर्मज हरे ॥
अधम जीव अघोर खल जे विना श्रम भव जल तरे ॥

शब्द खोज कीजो नर प्रानी। बिन सत शब्द बांधि यम तानी ॥
आगे अमिय लोक इक आही। तहां शब्द बैठो अति छाही ॥
ताका ज्ञान करो हो साधू। सहजहिं सुरति लगाव समाधू ॥
सहजहि युग अरु सहज प्रमाणा। पावे जीव होय निरवाणा ॥
सहज पाय जिव सहजहि तरई। काया अमर सहज सों करई ॥
सहजहि शब्द सहज गहि राखा। सहजहि दरश पुरुष अभिलाषा ॥
सहजहि अंक गुप्त है भाई। पावे जीव हंस होय जाई ॥
सहजहि पुरुष जगामग ज्योती। पाप पुण्य तेहि घर नहिं होती ॥
युग अघासुर जीवन लायी। एक करोड़ हंस मुकतायी ॥
धर्मदास मैं सत ही भाखूं। पुरुष नाम तोहि गोय न राखूं ॥

छन्द–आदि अम्बु अमर अदली अगम निगम अपार हो ॥
आनंद आर्य अचिन्त अविगत अकह अविचल सार हो ॥
कामोद कंकवत छत्रधारी मुक्ति दाता गाइये ॥
अगाध पुरुषोत्तम जु कहिये अरु मुकुट मणि कहँ ध्याइये ॥

सोरठा-पुरुष नाम अपार, धर्मनि एतक वर्णऊ ॥
कहेउ वीश निरधार, तुम सुनियो चित लायकै ॥

इति श्रीअम्बुसागरे अघासुरयुगकथावर्णनो नाम प्रथमस्तरंगः।

अथ द्वितीयस्तरंगः

बलभद्र युगकथा वर्णन

धर्मदास वचन–चौपाई

धर्मदास बिनये प्रभुराई। दूजे युग मोहिं कथा सुनाई ॥
तुच्छ बुद्धि हम तुम मति आगर। हंसराज भाषो प्रभु नागर ॥

सतगुरु वचन–चौपाई

धर्मदास बूझो मतिवाना। भाषू शब्द सत्य सहिदाना ॥

युग बलभद्र दूसरा भाखों । तुमसन गोय कछू नहिं राखों ॥
लोक वेद जिन दूर बहाई । सोइ जीव सु पुरुष मन भाई ॥
आदि नाम के सुमिरन पावा । एक चित्त मन सुरति लगावा ॥
चौदह लाख जीव पठवाई । सत्य लोक महँ बैठे जाई ॥
तिन देखा इक हंस अनूपा । षोडश रवि तहँ देख स्वरूपा ॥
तब हंसा ते पूछन लियऊ । केहि आधार यहां तुम रहेऊ ॥

लोकके हंस वचन—चौपाई

कहे हंस हंसनि सों बाता । सत्त पुरुष निज अहहिं विधाता ॥
उनका शब्द गहा चितलायी । तब पृथ्वी महँ जन्म धरायी ॥
नाम पान पाँजी मोहिं दीन्हा । यहि आधार लोक हम चीन्हा ॥
अब मैं तुम सन बूझूँ भाई । अपनी बात कहो समझाई ॥

दोहा—हम तुम कहँ भल बूझहीं, कहो हंस समझाय ।
कौन डोर चढि आयऊ, सो मोहीं देहु बताय ॥

हंस वचन—चौपाई

कहे हंस हंसन सों बाता । सत्य शब्द निज आहु विधाता ॥
अजवन बीरा दीन्हा हाथा । ताहि डोर आये हम साथा ॥
आदि पुरुष है सिरजन हारा । एकहि मूल एक है डारा ॥
हम तुम एक पुरुष के कीन्हे । अब काहे तुम अन्तर दीन्हे ॥
हम सन भेंट करो तुम आयी । अब काहे को गहर लगायी ॥
सकल हंस के पुरुष है राजा । युगनयुगन जिन जीव निवाजा ॥
निर्गुण पुरुष आहिं निर्वाना । निर्गुण नाम पान सहिदाना ॥
इतना वचन हंस समझायी । तबही हंस मिले उठि धायी ॥
युगल अंक भर कीन्ह मिलापू । भयो हर्ष तब मिट्यो सन्तापू ॥
तबै हंस बैठे रुचि आसन । आज्ञा मांगि पाय अनुशासन ॥
इतनी कथा भई तहँ भाई । चार लाख युग गये बिताई ॥

तेहि क्षण चार अंश चलि आये । आभा ताही बरणि नहिं जाये ॥
कोटि भानु शोभा अति आगर । हंसा देखि चकित भयो नागर ॥
बूझे हंस हंस सुनु बाता । इनकर नाम कहो मोहिं भ्राता ॥

लोकके हंस वचन

कहे हंस हंसा सुन भाई । एतो हंस पुरुष के आई ॥
हंसन केर अहहि सुखदाई । जगमहँ प्रगट होहि जिव लाई ॥
लोके माहिं पुरुष के अंशा । भव महँ जाइ कहावे वंशा ॥
सोइ कहत ब्यालिश अंश अपारा। देइ पान हंसा निस्तारा ॥
अकह अंश सत्ताइस वंशा । नाम देइ यम मेटहि संशा ॥
षोडश जो हंस अंग बखानी । नाम चतुर्भुज सत की बानी ॥
राम रसाइन ऐसहि साता । सह तेजी जग नाम सुहाता ॥
ये चारों गुरु जग कढिहारा । इनकी बांह जगत हो पारा ॥

हंस वचन–चौपाई

यह सुन हंस बहुत हर्षाना । जस पंकज बिहसे लख भाना ॥
कर दंडवत चरण हिय लाई । चारों गुरुके टेके पाई ॥
भल साहिब मोहिं दरशन दीन्हा । पतित जीव आपन कर लीन्हा ॥
हम साहिब चीन्हा परतापा । जन्म अनन्त मिटा सन्तापा ॥

छन्द–दरश दे आपनो कियो मम जन्म कीन्ह कृतारथा ॥
हंस नायक तुम धनी हो मोहिं दरशकी शारधा ॥
अमर पुरुष के दरश कारण चित्त मम अभिलाष है ॥
स्वाति चातक जिमि रटत तिमि तृषा अति अकुलात है ॥

सोरठा–दर्श करायो मोहिं, युग अनन्त बिछुरत भये ॥
विनय करों प्रभु तोहिं, बेगि विलम्ब न कीजिये ॥

चारु गुरु वचन

छन्द-पुरुष आज्ञा लाय ततक्षण हंस जाय मिलाइया ॥
चरण कण्ठ लगाय हियमें हंस सो भर पाइया ॥
अमिय फल हंसन दिये भय रूप षोडश भानु हो ॥
द्वीप द्वीपन कर कुतूहल, पुष्प सज्या वान हो ॥
सोरठा-हंसहि अनन्द, रजनी गत जिमि दिवस हो ॥
कोक शोक मिट द्वन्द, धर्मदास इमि हंस सो ॥

इति श्रीअम्बुसागरे बलभद्रयुगकथावर्णनो नाम द्वितीयस्तरंगः ।

अथ तृतीयस्तरंगः

द्वन्दर युग कथा वर्णन

धर्मदास वचन-चौपाई

धर्मदास आनँद मन कीन्हा । गद्गदवाणी अति प्रिय चीन्हा ॥
और कथा कह बन्दी छोरा । हंस उबारन करो निहोरा ॥

सतगुरुवचन

सत गुरु कहै सुनो धर्मदासू । सत्य शब्द भाषूं परकासू ॥
जग द्वन्दर जब प्रगट्यो आई । पुरुष अवाज जीव बरलाई ॥
चीन्हेउ मोहिं कीन्ह तेहि काजा । दीन्हेउ नाम काल उठभाजा ॥
दोय हजार बोध जिव आये । नाम पाय तेहि लोक पठाये ॥
युगहु अखिल दश लाख बखाना । सतसत भाषूं करहु प्रमाणा ॥
पाय पान कीन्हा परकाशा । अगम निगम बैठे सुखवाशा ॥
शुभकृत सेतु हंस ले जाई । अमर देह हंसा तहँ पाई ॥
दीप कथा भाषूं सहिदानी । बैठे योग सतायन ज्ञानी ॥
सत्य अंश उन करहै नाऊ । युग युग पृथ्वी जीव मुक्ताऊ ॥
उनते बोध जीव का होयी । तिनते काल रहे मुख गोयी ॥

श्रुति उत्पन्न पुरुष जब लीन्हा । श्वास शब्दते सब कुछ कीन्हा ॥
अछप द्वीप इक गुप्त रहाई । तहँ जल रंग अंश बैठाई ॥
तिनके बहुत जीव हैं साथा । जीवन माथ देहिं वे हाथा ॥
श्वेत नाम द्वै चँवर डुलाई । कोटि हंस तहँ माथ नवायी ॥
लगी तहां मणिन की पाँती । झमक झमक जहँ बरसै स्वाती ॥
नवो रत्न मन्दिर महि लागे । हंसराज निद्रा महँ पागे ॥
युग असंख्य सहजहि चलि जाई । तब जल रंग जाग उठ भाई ॥
शठिहारन सों बूझहि बाता । मोसन सत्य कहो विख्याता ॥
हम निद्रा महँ रहे मुरझाई । कौन अंश धरणी महँ जाई ॥

शठिहारा वचन—चौपाई

तब शठिहारन माथ नवाये । दोउ करजोर बिनय उठलाये ॥
युग इन्दर साहिब पगधारा । नाम कबीर हंस रखवारा ॥
जीवन पान दीन्ह जग आई । दोय हजार हंस मुकताई ॥
या मारग पहुँचे तब आई । खबर तुम्हारि कीन्ह बहुताई ॥
तब तुम निद्रा लागी स्वामी । हंसन लेइ गये सुख धामी ॥

जलरंग वचन

कह जलरंग सुनो शठिहारा । पुरुष दीन मोहीं मग भारा ॥
सबकर उतपन कर भल जाना । हमही सत्य सुकृत है पाना ॥
साधु महन्त मोहिं पहँ आई । संग हमार लेय घर जाई ॥
हम आज्ञा युगयुग चलिआवा । मो बिन यहवां जीको पावा ॥
हम आज्ञा काहे नहिं लीन्हा । कैसे कबीर पुहुमि पग दीन्हा ॥
अब कबीर यहवां नहिं आये । कैसे जग महँ पान चलाये ॥
द्वीप एक माणिकपुर नाऊ । आदि पुरुष तहँ आप रहाऊ ॥
रूप रेख तिनके कुछ नाहीं । वर्णत वचन बनत नहिं ताहीं ॥
हीरा नखत सु माथे राजे । अनहद ध्वनितहँ अतिप्रिय गाजे ॥

कोटिन रवि इक रोम लजाई । अमिय स्वरूप हंस मन भाई ॥
अविगत अचल अभयपद देवा । षोडश सुत तेहि लावहि सेवा ॥
नाम सुपान पुरुष कर सारा । पावत जीव होहिं भव पारा ॥
सत्य शब्द का करे निवेदा । ताको मिले अभय पद भेदा ॥
सत्य शब्द ले बोले भाई । सत्य शब्द ले बैठे जाई ॥
सत्य खोज सतही ले रहई । सत्य शब्द तेहि काल न दहई ॥
जाके हियमें सत्य प्रकाशू । ताकहँ लोक होय सुख बासू ॥

दोहा–लोक लोक सबही कहें, कौन दिशा है लोक ।
लोक लाज कुल तोरही, ताहि ताल नहिं रोक ॥

चौपाई

उत्तर दिशा लोक है भाई । अगम पुरुष जहँ आप रहाई ॥
ताहि नाम पावे परमाना । कोटिन मध्य हंस कोइ जाना ॥
सतगुरु मिले जेहि देहि लखाई । सुरति निरन्तर ध्यान बताई ॥
मकर तार तहँ लागी डोरी । पहुँचे हंस नाम की सोरी ॥
ताहि लोक के नाम अपारा । षोडश नाम ताहि अनुसारा ॥

छंद–अजर अमर अपार अस्थिर अकह माणिक पुर अहै ॥
आनन्द कन्द विशाल निर्मल पुष्प दीप बिराज है ॥
सत सुख सागर अभय पद रहत लोक मनोहरं ॥
सन्तोष षोडश नाम संज्ञा लोक वर्णन को करं ॥

सोरठा–ऐसे पुरुष अपार, तिन आज्ञा हम पाइये ।
बैठि पताल मँझार, सन्धि दिखावन तब गये ॥

इति श्रीअम्बुसागरे द्वन्दरयुगकथावर्णनो नाम तृतीयस्तरंगः ।

अथ चतुर्थस्तरंगः

पुरवन युगकी कथा

चौपाई

सुनत धर्म मन भयउ अनन्दा । कहेउ वचन भेटेउ दुख द्वन्दा ॥
शब्द तुम्हार सुनत प्रिय लागा । दर्शन पाय मोह मद भागा ॥
अकथ कथा सुनि चित मम मोहा। तुम पारस हम हैं जिमि लोहा ॥
आगे और कहो मोहिं स्वामी । चरण गहूँ प्रभु अन्तर्यामी ॥

सतगुरु वचन

धर्मदास युग लेख सुनाऊँ । पुरवनयुग जिमि जगमहँ आऊँ॥
अंश सजीवन नाम हमारा । हीरा पान दीन्ह संसारा ॥
पुरवन युग की आयु बखानी । लाख पचास वर्ष सहिदानी ॥
सुकृत हम घर घर फिरि आये । हंस कोई नाह शब्द गहाये ॥
जहाँ तहाँ कर देवन सेवा । आदि पुरुषको लखे न भेवा ॥
आदि पुरुष निर्गुण है भाई । तीन लोक जिव रह दुहकाई ॥
माया त्रिगुण सेव जग राचा । देही धर सकलौं जग नाचा ॥
पारब्रह्म जो ताहि न चीन्हा । प्रेम पुरुष जिन रचना कीन्हा ॥
ध्रुव प्रहलाद सकल जग बीते । शिव सनकादि भये जग रीते ॥

साखी-गण गन्धर्व मुनि देव सब, इन्द्रादिक औ शेष ।
शारद आदि न पानऊं, खोजत थके गणेश ॥

चौपाई

योगी यती तपी को आहीं । सिद्ध सकल काल धर खाहीं ॥
विरला जीव कोइ नामहि जाना । जापर दया पुरुष अनुमाना ॥
हीरा पान जीव कहँ दीन्हा । सात लाख हंसा संग लीन्हा ॥
तिनमें सो पचीस नशाये । शब्द डोर परतीति न लाये ॥
जीव पचीस गये यम द्वारा । फिर गर्भहि लीन्हे अवतारा ॥

मूल मंत्र तिन गहि नहिं पाई । ताते जीव गयो डहकाई ॥
जो कोइ हंसा होय हमारा । सो देखे पुरुष दरबारा ॥
सहस वर्ष आयु जिव कीन्हा । सकल हंस ज्ञानी सँग लीन्हा ॥
ज्ञानी संग सब चलिवे लीन्हा । सत्य लोककी यात्रा कीन्हा ॥
पहुँचे तहां जहां जन रंगू । जल शोभा तहां उठत तरंगू ॥
जल रूपी तहां छत्र विराजे । सिंहासन तहँ अति प्रिय साजे ॥
श्वेत स्वरूप देखि सब ठोरा । आभा कहां कहूँ तेहि ओरा ॥

जलरंग वचन

तब जल रंग कहे को भाई । कौन अंश तुम कहां सिधाई ॥
हम निद्रा महँ रहे अलसाई । तुम हंसन ले लोक सिधाई ॥
अमर पुरुष पाँजी बैठारा । संग होय होवे जिव पारा ॥
हाथ हमार दीन्ह टकसारा । तुम मोहिं मेटि गये कस पारा ॥
पुरुष वचन कस मेटहु भाई । विन बूझे हंसन ले जाई ॥

सतगुरु उवाच

कह ज्ञानी सुनो जल रंगू । हम तुम एक नालके संगू ॥
हंसराज सो या मग तोहीं । सो हम जान कहा कहु मोहीं ॥
हम तुम एक आदि कोउ भाई । कस संशय आपन चित लाई ॥
हम तो युगन युगन मग आये । अमर पुरुष का संधि बताये ॥
सोई संधि आय हम पासा । कस आपन घट आनउ त्राता ॥
हम लघु तुम जेठे मम भ्राता । एक और सुनिये विख्याता ॥
कुष्टम पक्षी एक रहायी । तिन हमसों इक वचन सुनायी ॥
युग असंख्य बहु गये वितायी । ता दिनकी उन कथा सुनायी ॥
पक्षी कहे नयन हम देखा । युगन युगन का कहूँ विशेषा ॥

जलरंग वचन

तब संशय जल रंग जनायी । सुनिके वचन बोल अकुलायी ॥
महा प्रलय होवे जब भाई । पक्षी कौन अधार रहाई ॥

सो वृत्तान्त कहो मोहिं भाषी । पक्षी मोहिं दिखाओ आँखी ॥

सतगुरु वचन—चौपाई

तब ज्ञानी अस कहे समुझाई । कुष्टमपक्षी कहँ बात सुनाई ॥
महा प्रलय जब होवे भाई । स्वर्ग मृत्यु पाताल जलाई ॥
ता पीछे गति अग्नि विशेषा । चौदह भुवन झला हल देखा ॥
उलट पुलट पृथ्वी हो जायी । स्वर्ग रसातल जात नशायी ॥
ब्रह्म लोक वैकुंठ न रहेऊ । शिव इन्द्रादिक शूर नशि गयेऊ॥
तीन लोक जल बूडे भाई । कुष्टमपक्षी तब जल उतराई ॥
सो पक्षी किहि भाँति रहाई । नीर माहिं जस फेन तराई ॥
ऐसे पक्षी ता दिन कहई । तीन लोक मुख भातर रहई ॥
ब्रह्मा हर शंकर मुख माहीं । आदि भवानी तहां समाहीं ॥
मच्छ कच्छ अरु शेष वराहू । ध्रुव प्रह्लाद इन्द्र मुख माहू ॥
सुर नर मुनि गंधर्व जेते । यक्ष सराहू सब मुख तेते ॥
चन्द सूर उडगण सब झारी । ऋषि अरु नाथ सिद्ध अधिकारी॥
ये सब कुष्टमके मुख जायी । तीन लोक जिव तहां बचायी ॥

दोहा—तीन लोक चौदह भुवन, औ वैकुंठ पसार ।
जा कहँ तपसी तप करे, सो सब मुखहि मँझार ॥

चौपाई

महा प्रलय भयो सहस सत्ताइस । कुष्टमपक्षी एक रहाइस ॥
यह उत्पन्न तहां ते जानो । तुम जल रंग सत्य कर मानो ॥
सत्य अधार सत्य वह रहई । सत्य पुरुष अस्तुति नित करई॥
पुरुष अंश पक्षी है सोई । महा प्रलय जानत सब वोई ॥
अगम निगम सुमिरन भल करई । नाम अधार सदा चित धरई ॥

---

१ जलमय । २ अग्निकी ज्वाला ।

जलरंग वचन—चौपाई

कह जल रंग सुनो तुम वाणी। पक्षी दर्शन सुरति समानी॥
अब तुम मोहि संग ले जाई। पक्षी मो कहँ देहु दिखाई॥
तब जल रंग भेजि शठिहारा। चलो हंस सब संग हमारा॥

ज्ञानी वचन चौपाई

यह सुनि ज्ञानी वचन उचारा। शब्द विमान होहु असवारा॥
उभय विमान चढे मिलि दोई। चल विनोद हंस संग सोई॥
ज्ञानी अंश चले सब आगे। तब जलरंग संग सब लागे॥
क्षणमें गे पक्षी के पासा। लोक निरन्तर जहां निवासा॥
दोय अंश तहँ ठाढ़ रहाये। पक्षी कहँ तब जाय जनाये॥
पक्षी बैठे आसन मारी। युग पचास की लागी तारी॥

गण वचन

शब्द केर गण दीन्ह जगाई। खुल गइ तारी देखत लाई॥
तब गण अस्तुति विनवै लीन्हा। बारम्बार दण्डवत कीन्हा॥
ज्ञानी अंश पुरुष के आगर। अरु जलरंग साथ तेहि नागर॥
कोटिन हंस संग तिन लाई। पौरि तुम्हार ठाढ भये आई॥

कुष्टमपक्षी वचन

ज्ञानी जल रंगहि लाव बुलाई। तिनके साथ और नहिं आई॥

गण वचन

दोई अंश सुनो मति मानी। पक्षी वचनन सुनुहु प्रमाणी॥
सेना सकल छांडि तुम देहू। दोय अंश दर्शन तब लेहू॥
उभय अंश पहुँचे तब जाई। पक्षी दर्शन ततक्षण पाई॥
आदर बहुत भांति तिन कीन्हा। सिंहासन रचि बैठक दीन्हा॥
दृष्टि पसार देखि जलरंगू। बहुत ज्योति पक्षी के अंगू॥
जिमि कोटिन रवि शशि ले छाई। बहुत प्रकाश वरणि नहिं जाई॥

कृष्टमपक्षी वचन–चौपाई

पक्षी कहे सुनो हो ज्ञानी। केहि कारण तुम यहां सिधानी ॥
तुम तो अंश पुरुष के आगर। केहि कारण पग धारेउ नागर ॥
बड़े भाग दर्शन हम पावा। अति आनँद मोहिं चित आवा ॥
हम तो पक्षी मत नहिं जाना। तुम हो करता आदि पुराना ॥
तुम्हरी सुधि कोई नहिं पाई। कीन्ह कृतारथ मन्दिर आई ॥

जलरंग वचन

तब जलरंग बूझे चितलाई। केतिक युग ते यहां रहाई ॥
एकत संशय मम उर आवा। सत्य वचन मोहिं भाषि सुनावा ॥
आदि अन्त जानो तुम बाता। मोसन भाषि कहो विख्याता ॥
महा प्रलय पुरुष जब कीन्हा। कौन अधार कहां तुम लीन्हा ॥
उलटि पलटि नभ धरणी जाई। तब सब जीव कहां ठहराई ॥
जहवां जीव वास सब लाई। सो थल मो कहँ देहु बताई ॥

कृष्टमपक्षी वचन

सुन जलरंग वचन मैं भाषों। युगकी कथा गोय नहिं राखों ॥
महा प्रलय होवे जेहि बारा। तीनहु लोक होय जरि छारा ॥
पृथ्वी जरी होय भरि पानी। स्वर्ग पताल जलहि जल आनी ॥
दश योजन लग उठत तरंगा। महा प्रलय देखत जिव भंगा ॥
तीन लोक जल परलय कीन्हा। हम तो जलमहँ पग नहिं दीन्हा ॥
जैसे फेन जलहि उतराना। ऐसे बैठि पुरुष धरुं ध्याना ॥
उतपति परलय भाषि सुनाये। हम कबीर के अंश कहाये ॥

दोहा–जब पक्षी मुख बोलिया, अचरज भयो प्रसंग।
कोटि रूप लखि आपनो, दृष्टि देखि जलरंग ॥

चौपाई

कला देखि चकित मन भयऊ। मन का गर्व टूटि सब गयऊ ॥
तब कबीर निरखे चितलाई। जलरंग कौतुक देखि लजाई ॥

जलरंग वचन–चौपाई

लीला देखि शीश तर दीन्हा । अरु कबीरकी अस्तुति कीन्हा ॥
देही धर हम रहे भुलाना । सत पुरुष हम तुमहिं न जाना ॥
आदि अन्त तुम पुरुष हमारा । अस्तुति करे जलरंग अपारा ॥
हम आपन मनमें बड होई । नाम कबीर पुरुष है सोई ॥
यह कौतुक देखा हम ज्ञानी । तुमही पुरुष और नहिं आनी ॥

हंस वचन

अस्तुति करें हंस सब ठाढे । कौतुक देखि हर्ष चित बाढे ॥
धन्य धन्य तुम आदि गोसाई । पक्षी देह कहो किमि पाई ॥
यही वचन तुम कहो विचारा । तो तुम कर्ता सिरजन हारा ॥

कुष्टमपक्षी वचन–चौपाई

पक्षी कहे सुनो हो भाई । पूरव कथा कहूँ समुझाई ॥
हम कबीर आज्ञा नहिं कीन्हा । ताते पक्षी तन धर लीन्हा ॥
देह धरे भये युग दश लाषा । सत्य वचन हम तुयसन भाषा ॥
सहस सताइस परलय कीता । हम आगे इतना युग बीता ॥
हो जलरंग कहां तक कहऊँ । शून्य असंख्य द्वीपमें रहऊँ ॥
वहां बैठि प्रलय हम देखा । सबही बड़े जीव जल पेखा ॥
पुरवन युगकी कथा सुनाई । देख हंस हर्षित हो आई ॥
हीरा पान जल रंगहि दीन्हा । कुष्टम दर्शन जिहि दिन लीन्हा॥
हिलि मिलि भेद एककर जानो । तिनेहु अंश बहुत सुख मानो ॥
अब पक्षी के नाम सुनाऊँ । सात नाम मैं प्रगट बताऊँ ॥

साखी–जिव सागर आनंदसुख, हंस उबारन धाय ।
प्रलय देख विस्मित हृदय, दायर कुष्टम नाम ॥

जलरंग वचन–चौपाई

जल रङ्ग पायउ हीरा पाना । संशय गत हर्षित मन आना ॥
तुम लीला स्वामी अवगाहा । अंश हंस नहिं पावत थाहा ॥

छन्द–तुव चरित्र अगम अपार पावन लखि न काहूको परो ॥
मम चित्त गर्व घटाववे गुण देह पक्षी को धरो ॥
तुव कला जानि परी न हमको धरेउ अमित स्वरूप हो ॥
वहां पुरुष ह्यां हंस हो हम जान हंसन भूप हो ॥
सोरठा–चरण कमल बलिहार, कीन्ह दण्डवत विनय बहु ॥
हरषित भये अपार, रंक नरहि जिमि निधि मिले ॥

सकल हंस वचन–चौपाई

खड़े हंस सब पौरि दुवारा । तिन सब हिलिमिलि विनती धारा
कारण कौन दर्श नहिं पाये । तुम हंसन नायक प्रभु आये ॥
गे शठिहार हंस ले आवा । अरु पक्षी के दर्श करावा ॥
देखि रूप अति हर्ष समाना । तब ज्ञानी की अस्तुति ठाना ॥
छन्द–तुम आदिपुरुष अखंड अविचल पतित पावन नाम हो ॥
जीव बन्धन काट फन्दन जात ले निज धाम हो ॥
योग जीत कबीर ज्ञानी नाम जग महँ गाइया ॥
अकह अभय अपार तुम गति भाग जिन पद पाइया ॥
सोरठा–जुरे हंस बहु बृन्द, फूल रहे अरविन्द जिमि ॥
गति यामिनि सुख कन्द, अरुण चरण लखि अमिय कर ॥
विनय कीन्ह बहु वार, पद पंकज को ध्यान धरि ॥
हे प्रभु तुम बलिहारि, करें दण्डवत हंस सब ॥

इति श्रीअम्बुसागरे परवनयुगकथावर्णनं नाम चतुर्थस्तरंगः ।

अथ पंचमस्तरंगः

अनुमानयुग कथा वर्णन

धर्मदास वचन–चौपाई

धर्मदास टेके गुरु चरणा । अगम कथा भाषेउ प्रभु वरणा ॥
बहुतक ग्रन्थ सुनायउ काना । अम्बूसागर ग्रन्थ बखाना ॥
सुनि हितवचन मोहिं प्रियलागा । चातक स्वाति पाय जिमि पागा ॥

युग अनुमान कहो मोहिं भाषी । और शब्द कहँ चित अभिलाषी

सतगुरु वचन–चौपाई

धर्मदास मैं भाषि सुनाऊं । आदि रु अंत प्रसंग बताऊं ॥
जा दिन पुरुष बोल अनुसारा । एक शब्द ते कीन्ह पसारा ॥
वाणी ते माया उतपानी । तीन पुत्र तिन कीन्हा ठानी ॥
ब्रह्मा विष्णु महेश्वर कीन्हा । तीन लोक तिहु पुत्रन दीन्हा ॥
ब्रह्मा हाथ चार दिय वेदा । तीन लोक महँ करत न खेदा ॥
नेम धर्म अरु सकल पुराना । यह ब्रह्मा सब कीन्ह बखाना ॥
विष्णु देव मृत्यु लोकहि आये । तुलसी माला पंथ चलाये ॥
माला गले शंखिनी डारा । तीन लोक महँ है बड भारा ॥
राजा प्रजा सेव सब करई । विष्णु इष्ट सुमिरण मन धरई ॥
सेवत आये भये अनुरागी । करत संहार कहत हम त्यागी ॥
जार बारि तन कष्ट कराई । योग पन्थ यहि भाँति चलाई ॥
योगी यती तपी संन्यासी । आपन मुख कह हम अविनाशी ॥
शिव महिमा भाषत संसारा । दक्षिणदिशि महिमा अधिकारा॥
तीन पुत्र तिहुँ लोक सपूता । माता सों इन कीन्ही धूता ॥
माया कह माने नहिं कोई । आपहि आप कहावे सोई ॥

आद्या लीला

तब आद्या मन कीन्ह विचारा । तीन पुत्र भये सिरजन हारा ॥
माया मन झंखे बहु बारा । तीनों पुत्र भये बरियारा ॥
नाम हमारा दीन्ह छिपाई । तीन लोकमहँ अदल चलाई ॥
तब आद्या घट सुमिरण लावा । आपन माहिं आप निरमावा ॥
देवी अपनो मथ्यो शरीरू । शक्ति तीन उपजी बल वीरू ॥
तिन का नाम कहूं समझाई । रम्भा सुचिल रेणुका आई ॥
इन हिलि मिलि गण गंधर्व मोहा । राग रागिनी बहुविधि शोहा ॥
कर आभूषण गंधर्व लीन्हे । सकल साज तिन हाथन दीन्हे ॥

तिनका नाम कहूँ समझाई। बीनर बाबत मूरा लाई॥
सितार कमायच अरु मुहचंगा। ताल मृदंग नफेरी संगा॥
जलतरंग औ मुरली किंकिन। मोहर उपंग मंडल स्वर तिन्तिन॥
बाजे और छतीसों कहिया। गंधर्व हाथ साथ सब लहिया॥
मास महीना फागुन सोई। ऋतु वसन्त गावें नर लोई॥
टेसू वनस्पती सब फूले। अम्बा मौर डार सब झूले॥
चातक धारहिं वचन सुहावन। हंस कोकिला कोयल पावन॥
पिया पिया चातक प्रिय कहहीं। विरहिनि लाग मदन दुखजरहीं॥
अंग अबीर गुलाल चढाये। नाना भाँतिन अतर लगाये॥
कामिनि हेतु काम लव लाये। अंग अनंग बहुत विधि छाये॥
या चरित्र माया उपराजा। तीनहु लोक राग बल गाजा॥
जो सुन राग विषय मन धरहीं। बार बार ते यम घर परहीं॥
अविगत मोह राग रे भाई। राग सुनत जिव गे डहकाई॥
माया ध्वनि रागन को बांधा। जासे तीन लोक घर सांधा॥
प्रथमहिं राग षष्ट विधि गावा। तिन रागन का नाम सुनावा॥

* रागोंके नाम

दोहा-भैंरौं और हिंडोल अति, पंचम राग कवस्त।
दीपक मेघमलार भल, कीन्ह देव सब दस्त॥

---

* यद्यपि इसमें ऐसा लिखा है किन्तु समयके फेरसे लेखकोंकी कृपासे ग्रंथोंकी जो दुर्दशा हो रही है उसका न कहना ही अच्छा है इस कारण से अन्य संगीत की पुस्तक से राग-रागनियों के नाम यहांपर लिखते हैं।

षट्राग-दोहा

राग प्रथम भैंरों कह्यो, मालकोस पुनि जान।
हिंडोल राग तीजो कहत, दीपक राग बखान॥
श्रीराग कवि कहत हैं, मेघ राग पुनि सार।
षट् रागन के नाम यह, कहं भेद विस्तार॥

चौपाई

कीन्ह उचार राग तेहि वारा । ऋषि मुनि मोह देव सब झारा ॥
माया डारी सब पर फांसी । योगी यती तपी संन्यासी ॥
ततक्षण देवी रची धमारा । इकसठ रागिनि तहां उचारा ॥

रागोंकी रागिनियोंके नाम

भैरों की धुनि भैरवी, बंगाली वैरारि ।
मधुमाधव अरु सिन्धवी, पांचों विरहिन नारि ॥
टोडी गौरी गुनकली, कुंमायत पहिचान ।
और कोकब को कहत हैं, मालकोसकी जान ॥
रामकली पटमंजरी, और कहै देवसाख ।
ये नारी हिंडोल की, ललित बिलावल राख ॥
देशी नट अरु कान्हरो, केदारो कामोद ।
दीपक की प्यारी सबै, महा प्रेम परमोद ॥
धनासरी आसावरी, मारू बहुरि वसंत ।
श्रीराग की रागिनी, मालश्री है अन्त ॥
भोपाली अरु गूजरी, देशकार अरु मल्लार ।
बंक वियोगिनी कामिनी, मेघरागकी नार ॥

छहों रागोंके गुण

भैरों शूर शूरता गहै, कोल्हू चलै जु धाय ।
मालकोस तब जानिये, पाहन पिघिलि बहाय ॥
चलै हिंडोलो आपते, सुनत राग हिंडोल ।
बरसै जल घन धार अति, मेघराज के बोल ॥
श्रीराग के सुर सुने, सूखो वृक्ष हराय ।
दीपक दीयो बरि उठै, जो कोउ जानै गाय ॥

रागोंका समय

पिछले पहरें निशि समै, भैरों राग बखान ।
मालकोस तब गाइये, जब सब निकसे भान ॥
एक पहर जब दिन चढै, करै राग हिंडोल ।
ठीक दुपहरी के समय, दीपक के सुर बोल ॥

तेहि रागिनि के नाम सुनाऊँ । भिन्न भिन्न कर प्रगट बताऊँ ॥

इकसठ रागिनियोंके नाम

१ धनाश्री २ जैतश्री ३ मालश्री ४ श्री ५ गुजरी ६ विरावरी ७ आशावरी ८ जेतसारी ९ गन्धारी १० वरारी ११ सिन्धूरी १२ पञ्चश्री १३ गौरी १४ जौनपुरी १५ विहागरा १६ कान्हरा १७ केदार १८ मारू १९ मलार २० धूरिया मलार २१ गौड मलार २२ गडमलार २३ भूपाली २४ सुरकली २५ श्रीमाल २६ धूरकली २७ रामकली २८ रूपकली २९ गुनकली ३० सुहेली ३१ मोरवी ३२ पूर्वी ३३ कैरवी ३४ भैरवी ३५ कान्हारा ३६ तिल्लाना ३७ कल्यान ३८ यमन ३९ कल्यानी ४० सजीवनी ४१ सेधु ४२ मधुगंध ४३ सावन्त ४४ ललित ४५ सोरठ ४६ मरहठी ४७ टोडी ४८ नट ४९ गोड ५० विभास ५१ सुदेश ५२ सूहा ५३ परज ५४ काफी ५५ चन्द ५६ सुधराय जेंजेंवन्ती ५७ चरनायका ५८ सारंग ५९ बंगला ६० नायका ६१ खम्माच ।

चौपाई

मोहे ब्रह्मा विष्णु महेशा । नारद शारद और गणेशा ॥
शंकर जग महँ बड अवधूता । काम जार हो रहे सपूता ॥
कहँवा भूल गये अनुरागी । काम विरह तन उठ उठ जागी ॥
मदन अनूप राग है भाई । सत पुरुषन सों विचलन लाई ॥
सुरपति सनकादिक मुनि जेते । काम कला सब नाचे तेते ॥

श्रीराग चौथ पहर, जौलौं दिन अथवाय ।
मेघराज तबही भलो, जबं मेघ बरसाय ॥
फागुन में ये राग सब, जागत आठों याम ।
वसंत ऋतुमें निशि समय, एकयाम विश्राम ॥
भैरों शरद कुसुप शिशिर, अरु हिंडोल वसंत ।
दीपक ग्रीषम हेमश्री, मेघ सुपावस अन्त ॥

देखत छबि मोहे सब झारी । सुर समान माया गहि मारी ॥
सकल देव जब गे अकुलाई । काहू कर मन थिर न रहाई ॥
बूझो पंडित सुर मुनि ज्ञानी । जा महिमा तुम करत बखानी ॥
वेद पुराण भागवत गीता । पढि गुणि कहैं काल हम जीता ॥
तीनों गुण ईश्वर ठहरायी । माया फन्दा ताहि बनाई ॥
कैसे ताहि होय निस्तारा । जिन नहिं माना शब्द हमारा ॥
राघवानन्द नाम युग केरा । माया चरित कीन्ह तेहि बेरा ॥
तेहि द्विराग का कीन्ह उचारा । सकल जीव इमि मार पछारा ॥
अब हंसन का भाषूँ लेखा । धर्मदास चित करो विवेका ॥
छन्द-ताहि युग हम आय जीवन दीन्ह अमृत पान हो ॥
सहस सात उबारि जीवन जाय लोक समान हो ॥
पुरुष दर्शन कीन्ह ततक्षण रूप अविचल पाइआ ॥
पुष्प शय्या वास कराइ फल अमृत ताहि चखाइआ ॥
सोरठा-तुम बूझहु धर्मदास, युग युग लेखा भाषेऊँ ।
चीन्हे कोइ इक दास, जेहि सतगुरु दाया करें ॥

इति श्रीअम्बुसागरे अनुमानयुगकथावर्णनो नाम पंचमस्तरंगः ।

अथ षष्ठस्तरंगः

धीर्यमाल युगकी कथा

धर्मदास वचन-चौपाई

धर्मदास कहे सुनो गोसांई । अगम कथा तुम मोहिं सुनाई ॥
माया चरित दृष्टि हम आया । तीनों गुण बहु देव भुलाया ॥
अब जो और होय सो भाषो । समरथ मोसे गुप्त नहिं राखो ॥

सतगुरु वचन

आगे ज्ञान कही समझाऊँ । मूल नाम की कथा सुनाऊँ ॥
मूल नाम ना काहू पासा । पावे मूल कहावे दासा ॥

कलियुग साधू बहुत कहाये । मूल शब्द कोइ विरले पाये ॥
मूल शब्द ताकर है नामा । जाते वीर हंस भये कामा ॥
रंग रंगीले हंस भये तीनी । पक्षी वीरा हंस प्रवीनी ॥
वीरा दीन हंस पहुँचाई । महा पुरुष के दरश कराई ॥
सोई नाम साधु जो पावे । योनी संकट बहुरि न आवे ॥
द्वीप असंखन करे बिलासा । जरा मरण की छूटी त्रासा ॥
जो वह नाम साधु नहिं जाना । सो साधू भये जिवत मशाना ॥
अकह नाम कैसे कै जानी । लिखि नहिं जाय पढो नहिं बानी ॥
कलियुग साधु कहैं हम जाना । झूठ शब्द मुख करहिं बखाना ॥
कोटिक नाम जपो रे भाई । कौनिहु भाँति युक्ति नहिं पाई ॥
नाम अनन्त अहो संसारा । किंचित है निज शब्द हमारा ॥
देही नाम सबै कोइ जाना । नाम विदेह विरल पहिचाना ॥
काया धरि हम घर घर आये । काया नाम कलामल पाये ॥
ताते मोहिं ओछ कर जाना । आप आप में करे बखाना ॥
दिल कहँ कहे कबीर कबीरू । पांचों तत्त्व तीन गुण थीरू ॥
दिल महँ बोलत ब्रह्म बखाना । अन्तकाल होवे जिव हाना ॥
दिल महँ बोलत कौन ठौरा । भेद बतावहु साधू मोरा ॥
ठौर न जान कहे कुछ औरा । सो जिव मार काल झकझोरा ॥
दिल भीतर महँ करे विवेका । करे खोज तब आगे देखा ॥
रचि पचि धुनि माथो गहिमारा । बिन सतगुरु नहिं होवे पारा ॥
नाम सों बंधि सुरति है भाई । सुरति निरति मिलि शब्द समाई ॥
सुरति औ निरति शब्द करे ठौरा । सो साधू होवे निज मोरा ॥
तीनों गुण सों बांधे हेता । अन्तकाल होवे सो प्रेता ॥
माथे टोपी तिलक बनायी । माला गले सरवनी लायी ॥
कहे सकल सब हमही पाये । पेलि जीव यम द्वारे आये ॥

अपने मुख हो गुरू कहावे। गुरु कहि कहि सब जीव भुलावे ॥
गुरु शिष्य दोनों डहकायी। विना शब्द जो गुरू कहायी ॥
अथवा पांच नाम नहिं जाना। नरियर मोरहि भय विज्ञाना ॥
दोहा-बहुत गुरू संसार में, कोइ न लागे तीर।
सभी गुरू बदि जायँगे, जाग्रत गुरू कबीर ॥

चौपाई

मूल दीप कर श्वेतहि पाना। धीरज मान जु भाषेउ ज्ञाना ॥
वीरा नाम विरोधिक भाई। धीरमाल युग जीवन पाई ॥
लाख हंस कागज महँ राखा। सुरति नाम जीवन सों भाषा ॥
नाम अचिन्त पुरुष कर सारा। यही नाम जीवन रखवारा ॥
पुरुष नाम खोजो जो भाई। पावे हंस लोक कहँ जाई ॥
लोक वेद की छोडे आशा। अगम पान का कर विश्वासा ॥
आगम आन अगम के हाथा। आदि अन्त वे सब के साथा ॥
वीरा नाम जीव उपदेशा। सतगुरु आये काटि कलेशा ॥
जो हंसा सतगुरु कहे करई। आज्ञा मान चरण कहे धरई ॥
आर्य पुरुष के दर्शन पावे। षोडश भानु रूप जहँ आवे ॥
दक्षिण औ पूरव पुनि पश्चिम। तीनहु खूँट देख इम सूक्षम ॥
उत्तर दिशा धनी को देशा। तहां न व्यापे यम का लेशा ॥
छंद-आर्य पूरुष दीन्ह अज्ञा जीव कारण आइया ॥
युग धीर्यमाल में दीन्ह वीरा लक्ष हंस पठाइया ॥
अमर लोकहि लीन्ह वासा पुरुष के दर्शन लहे ॥
रूप षोडश भानु होकर अमिय आसन तहँ अहे ॥
सोरठा-पुष्प मनोहर वास, कर कंकण शिर मुकुट मणि ॥
माथे छत्र विलास, कला कुतूहल हंस मिलि ॥

इति श्रीअम्बुसागरे धीर्यमालयुगकथावर्णनं नाम षष्ठस्तरंगः।

अथ सप्तमस्तरंगः

तारण युग कथा वर्णन

धर्मदास वचन-चौपाई

धन्यभाग तुम मम गृह आवन । दर्शन दीन्ह कीन्ह मोहिं पावन ॥
मोहि अधम कह कीन्ह सनाथा । बार अनेक नवायउ माथा ॥
खोजी होय शब्द पहिचाना । जाग्रत हंस होय निर्वाणा ॥
जिन जीवन पर तुम्हरी दाया । तिन कह दीन्हेउ लोकपठाया ॥
और हंस जिन सेवा लाये । युग युग महिमा मोहिं सुनाये ॥

सतगुरु वचन-चौपाई

सुकृति सुनो लोक की बानी । आदि पुरुष अरु बैठे ज्ञानी ॥
बीरा पुरुष दीन्ह मोहि हाथा । जाते हंसा होय सनाथा ॥
तारण युग परमाना आनी । चार लाख युग आयु बखानी ॥
युग आयुर्बल जीव का भाई । सहस एकादश वर्ष रहाई ॥
उत्तम पंथ रहे इक राई । धर्मदास तेहि कथा सुनाई ॥
योगी यती तपी गहि बांधे । देखत ताहि कोठरी धांधे ॥
संन्यासी ब्राह्मण वैरागी । देखत ताहि क्रोध अतिजागी ॥
षटदर्शन कहँ देखत जरई । जरत हुतास ज्वाल घृत परई ॥
ब्राह्मण माथे टीका ठाटा । लेख परी घस ताहि ललाटा ॥
ब्राह्मणको ले सांटी मारे । तोर जनेऊ आगी डारे ॥
वेद पुरान पढन नहिं पाई । भक्ति राह मर्याद उठाई ॥
या विधि शासत जीवन देई । हरि हरि नाम न कबहूँ लेई ॥
वनके मृगा चरन नहिं पावे । द्विपद चतुष्पद धरि धरि खावे ॥
मारे जीव जन्तु बहुतेरा । कोइ न बचे मार बहु घेरा ॥
ऐसा अधम चाल तेहि राजा । जीवन कष्ट देखि भइ लाजा ॥
तब अपने चित कीन्ह विचारा । व्यंग कौन आयउ संसारा ॥

वटका वृक्ष तासु दरवाजा । ताहि तरे हम आसन छाजा ॥
आसन मारि ध्यान महँ पागे । एकहि सुरति नाम चित लागे ॥
यहि अन्तर इक वृषली आई । नाम सगुनिया तासु रहाई ॥
आय ठाढि भइ साहिब आगे । विनय कीन तब पूछन लागे ॥
कौन देश कौने अस्थाना । यहवां साहिब कीन्ह पयाना ॥
जो मांगो सो देहुँ मँगाई । ले भिक्षा आगे चल जाई ॥
विषम द्वार यह राय अपारा । राजा दर्शन करहि तुम्हारा ॥
राजा नाम सुने जो पाई । तुर्तहि गर्दन मारिहि आई ॥

दोहा-इकइस पौरि के भीतरहि, तहँ बैठे हैं राय ।
कोई मम नहिं पावई, रानी संग रहाय ॥

स्वामी वचन-चौपाई

स्वामी कहे सुनो तुम बाता । राजहि जाय कहो विख्याता ॥
दरश हमार करे जब आई । अगम निगम हम भेद बताई ॥
राय परीक्षा हमरी पावे । छूटे हंस लोक कहँ जावे ॥
तुम जिन शंका मन महँ आनो । निश्चय वचन हमारा मानो ॥
वचन हमार राय पहँ जाहू । सकल पौरिया बश तुम आहू ॥
सुनतहि वचन माथ तब नाई । तब भीतर कहँ दीन्ह रिंगाई ॥
पहिली पौंरि उलंघेउ जबहीं । दूजी पौंरि पहुँचि गयो तबहीं ॥
तीजे पौंरि पै पूछन लीन्हा । चौथा पौंरि जाय पग दीन्हा ॥
पांचे पौंरि संग मिलि गयऊ । बहु आधीन छठी तब भयऊ ॥
सातों पँवरि भयउ उठि ठाढा । आठों पौंरि हरष चित बाढा ॥
नवीं पौंरि पर माथ नवाई । दशे पौंरिया आदर लाई ॥
पौंरि इकादश पूछे बाता । द्वादश पौंरि देख कह माता ॥
त्रयोदश पौंरि वचन अनुसारा । चौदह पौंरि लागि कछु बारा ॥
पन्द्रह पौंरि देखि वश भयऊ । षोडश पौंरि देख मन रहेऊ ॥

सत्रह पौंरि सांच तब बोला। पौंरि अठारह अन्तर खोला ॥
उनइस पौंरि सबन अधिकारा। बीसइ पौंरि कीन्ह पैठारा ॥
इकइस पौंरि ठाढ जब भयऊ। छरीदार तब पूछन लयऊ ॥
कहु काहे भीतर चल जाई। कौन काज तहँ राय रहाई ॥
राजा गर्दन मारै तोरी। सत्य वचन माने दृढ मोरी ॥

वृषली वचन–चौपाई

स्वामी रोकि बैठे दरवाजा। तिनकी खबर कहो तुम राजा ॥
भल जानो तो जाय जनाऊ। नातरु फेरि बहुत पछताऊ ॥
छरीदार संशय मन लाई। अगम बात यह जाय सुनाई ॥
सोच करन तब लाग शरीरू। राजा वंग बडे बल बीरू ॥
सत्य वचन तुम कहो विचारी। गर्दन मारे राव हमारी ॥

सगुनिया वचन–चौपाई

कह वृषली सुन बात हमारा। मे तो करता सिरजन हारा ॥
अनहित कर जनि बोलहु वानी। राजहि खबर कहो तुम जानी ॥

छरीदार वचन–चौपाई

छरीदार भीतर चलि गयऊ। कीन्ह प्रणाम ठाढ तब भयेऊ ॥
दोउ कर जोरि बोल सत भावा। सिंह एक द्वारे तुम आवा ॥

राजा वचन–चौपाई

तब राजा बूझन अस लावा। केहि कारण सन्मुख तुम आवा ॥
अपनी बात कहो समझाई। केहि कारण तुम हमलग आई ॥

छरीदारवचन–चौपाई

आय सगुनिया हमरे पासा। वचन एक हम सो परकाशा ॥
स्वामी एक बैठा है द्वारा। तिन राजा कह बेग पुकारा ॥
साहिब दरशन देन कहँ आये। तेहि कारण हम इहां सिधाये ॥
जो महाराजा आयसु पाऊँ। जाय सिखावन ताहि सुनाऊँ ॥

राजोवाच–चौपाई

सुनतहिराय कोप चित लायो । वह स्वामी को मार डरायो ॥
कहै सगुनिया वचन प्रकाशी । तो कहँ राय दिवावे फांसी ॥
यह सुनि छरीदार उठ धाये । वृषली कहँ तब वचन सुनाये ॥
भाग सगुनिया कहै संदेशा । छांडहु द्वार लेहु परवेशा ॥
राज कोप बहु चिन्तन कीन्हा । छरीदार मोहिं मारन लीन्हा ॥
तुम यहवां ते बेग सिधाई । और देश महँ बैठो जाई ॥
पल इक महँ अब होय पुकारा । यहां न रहना होय तुम्हारा ॥
कहूं पुकार सुनो तुम बाता । पल महँ राजा करिहै घाता ॥
साहिब सन चित कीन्ह विचारा । घट भीतर तब सुरति सम्हारा ॥
उठा कोप पुनि कीन्ह समाई । हम तो राय उबारण आई ॥

साखी

जो अन इच्छा होय मम, तुर्त होत है नाश ॥
पुरुष वचन सम्हारके, अन्तहि करहु निवास ॥

चौपाई

यह तो जीव अबुध अज्ञानी । समझ अपन घट नाहिं न आनी॥
छोडि द्वार तब दीन्ह रिंगाई । पुरी बाहर हम पहुँचे जाई ॥
मान सरोवर जहँ इक सागर । बैठेउ जाय तहां प्रभु नागर ॥
नगर लोक जल तहां भराई । सागर दीरघ अति रहे भाई ॥
सोई जल राजा कहँ जाई । क्षितिया लौंडी लै पहुँचाई ॥
राजा रानी सबै अन्हाये । तेहि वृषली कर जल सब पाये ॥
सवा प्रहर दिन चढे प्रमाणी । तब लग राय नींद अलसानी ॥
उठत राय क्षितिया चलजाई । कंचन कलशा जलकहँ जाई ॥
धोय मांज जल घडा बुडावा । लीला एक तहां हम लावा ॥
घडा तासु बाहर नहिं होई । क्षितिया लौंडी तब अति रोई ॥

तब वृषली बहु कीन्ह पुकारा। तुरतहि राउ डार मोहिं मारा ॥
गगरी भरे उठे नहिं भाई। बहुत नारि देखन कहँ धाई ॥
सरवर भीतर लोग अन्हाई। सो सब गागर आन उठाई ॥
दश अरु वीस पचीसक आये। गागर को सब लोगहि धाये ॥
बजत हँकार लगे तब कीन्हा। रंचक घडा उठन नहिं लीन्हा ॥
सवा पहर दिन ऐसही बीता। क्षितिया त्रास जीव बहु कीता ॥
कैसे जल तें घडा निकारी। भयउ अबेर राउ मोहिं मारी ॥
अपने चित अति मानेउ त्रासा। जलमहँ घडा पकड को गांसा ॥
सागर आवत जन्म बिताई। कौन चरित्र आज भौ भाई ॥
सो दो मानुष तहवां आये। तेऊ हार बहुत सकुचाये ॥
खबर पाय राजा चलि आये। रानी सुनिके अचरज पाये ॥
तब राजा कहँ बात जनाई। सुनके राय रहे अरगाई ॥
तब राजा चित कीन्ह बिचारा। यह तो बात अगम व्यवहारा ॥
चला राय तब बाहर आवा। सकल लोग कहँ वचन सुनावा ॥
सुनिके लोग भये अज गूता। घडा उठावन चले सपूता ॥
राजा तबही तुरंग मँगाई। हो असवार चले चतुराई ॥
नेगी पंडित और प्रधाना। देखत सकल चले अकुलाना ॥
सहस वीस मानुष तब जाई। राजा संग चले सब धाई ॥
नगर लोग सबहि चलि आये। बालक त्रिया वृद्ध सब धाये ॥
कुंजर शंकर राय नगावा। बांधो घट बहु लोग लगावा ॥
सहस वीस मानुष पचिहारे। किंचित घडा टरत नहिं टारे ॥
तबही राय बहुत हँकराई। सहसन कुंजर दीन्ह लगाई ॥
फीलवान आंकुश गज मारा। मारत गज तब देह चिकारा ॥
नेक घडा नहिं उठत उठाये। राजा मन तब हार लजाये ॥
चार लाख मानुष रह ठाढा। देखत सकल अचम्भा बाढा ॥

छन्द–राय देखत भयउ व्याकुल वार बहु जल निरखही ॥
आज अचरज भयो अति हि घडा गहि यह कोइही ॥
सहस कुंजर लाग मानुष नहीं किंचित सो टरे ॥
कीन्ह बहुत उपाय हारेउ अभय देखत जिव डरे ॥
सोरठा–मंत्री करहु विचार, हम घट अति संशय भयो ॥
व्याकुल चित हमार, कीजै कौन विचार अब ॥

चौपाई

मंत्री कहे सुनो महराजा । कहत वचन आवत है लाजा ॥
साधु एक आया दरवाजा । तापर आप कीन्ह इतराजा ॥
सो स्वामि यह चरित दिखायी । हमरे चित अस बर्तंत आयी ॥
यहि अन्तर एक कीन्ह तमाशा । सो लीला भाषूं धर्मदासा ॥
सरवर भीतर वृद्ध रहाई । सुवा रूप धरि बैठे जाई ॥
देखि पारधी ततक्षण आवा । बाण खैंच मारन कहँ धावा ॥
उलटा बाण पारधिहि लागा । लगत बाण पारधी भागा ॥
दोय चार सो जाय जनाये । देखन ताहि लोग पुनि आये ॥
दृष्टि पसार सुवा कहँ देखा । सुन्दर सुवा वरणि अति लेखा ॥
कर गुलेल ले गुला चढाये । टूटा गुला खंड हो जाये ॥
दो चार दश वीस पचासा । सुवा केर सत दीख तमाशा ॥
तारी ठोंके ढोल बजाये । सुवा नहीं तहँ उडे उडाये ॥
तबहीं लोग राय कहँ जाई । सुवा एक यहि वृक्ष रहाई ॥
बहुत रूप ताकर महराजा । कीन्हेउ शोर बजायउ बाजा ॥
तहवां तें नहिं सुवा उठाये । बैठि वृक्ष आनँद मन लाये ॥
गागर छोड राय चल गयऊ । आज्ञा राय पारधी दयऊ ॥
जाय पारधी सुवा फँदावो । जो मांगो सो तुरतहि पावो ॥
चले पारधी तुरतहि गयऊ । सूवा पर फंदा तिन्ह नयऊ ॥

जब फन्दा बहु डारे भाई। तबही सुवा छोट हो जाई॥
जब वह फन्दा छोटा कीन्हा। तबही रूप बडा धर लीन्हा॥
बहुतक यत्न पारधी लाये। ताहि सुवा हाथ नहिं आये॥
सकल पारधी रह तब हारी। राजा सों तब कहें पुकारी॥
सुवा न आये हमरे हाथा। चाहो तुरत कटाओ माथा॥
बहुतक रूप सुवा के अंगा। राजा देखि भये चित भंगा॥
सात रोज ऐसहि जब बीता। राजा अन्न सुधा नहिं कीता॥
हम कहँ देख कीन्ह बड प्रीती। तब मोहिं उठी सत्यकी रीती॥
तब मैं उडा तहां तें भाई। राजा हाथहि बैठचो जाई॥
ततक्षण रानी देखी आई। देखि सुवा बहु सुंदरताई॥
जगमग ज्योति बहुत उजियारा। उन सुन रहन सुवा की धारा॥
रानी तब भीतर चलि जाई। अरु राजा कहँ बात जनाई॥
सुनतहि राय हर्ष चित आवा। जैसे रंक महा निधि पावा॥
वेगि राय तहवां पगु धारा। देखि सुवा हर्षेउ बहु वारा॥
राजा चीन्ह सुवा वहि आही। जा कारण हम कष्ट कराही॥
सरवर वृक्ष सुवा मैं देखा। सोई सुवा यह आय विशेषा॥
कंचन केरि कटोरी लीन्हा। दूधे भात ता भीतर कीन्हा॥
रानी लेकर आई धाई। उडकर सुवा हाथ पर जाई॥
तबही पकड प्रेम हित लावा। रानी राजा बहु सुख पावा॥
तब राजा मंत्री हकरायो। चतुर सोनारहि तुरत बुलायो॥
ततक्षण राव कीन्ह ज्योनारा। आये सुनारा बहुत तेहि वारा॥
राजाढिग गये चतुर सोनारा। तिन सो राजा वचन उचारा॥
अहहु प्रवीण चतुर अधिकाई। पिंजरा देहु हमार बनाई॥
सहस पचीस मुहर तब दीन्हा। पिंजरा तबै बनावन लीन्हा॥
सवा लाख हीरा लग मोती। दीन्हेउमणि तिनकी जडज्योती॥
सात हजार लाल की पाती। शोभा बहुत कहूं का भांती॥

बारह वर्ष बनावत गयऊ । तबलग सुवा सहजही रहेऊ ॥
भयो सिद्ध पिंजरा पुनि जबहीं । लेकर सुवा नायउ तेहि तबहीं ॥
रानी तबै पढावन लीन्हा । रामहिराम पढी मन दीन्हा ॥
तबही सुवा वचन अनुसारी । चेतहु राय प्रेत यम धारी ॥
इक दिन विछुरन सब सों होई । मोह प्रीति छांडो सब कोई ॥
वाणी यही कहत बहु बारा । दूजा वचन नहीं चित धारा ॥
राजा रानी कहत विचारा । सुवा बोल कुबोल पुकारा ॥
बार बार हम ताहि पढावा । राम राम चित एक न लावा ॥
इक दिन राय अहेरहि गयऊ । लीला एक तहां हम कियऊ ॥
राजा ऐसे चेतत नाहीं । तबै विचार कीन्ह मनमाहीं ॥
दीन्ही आज्ञा अग्निको जबहीं । महलन महँ धधकि उठी सो तबहीं ॥
सून्यो रानी आगी लागी । सुत कलत्र ले रानी भागी ॥
भयो तेज अति अग्नि अपारा । जरत द्रव्य सकलौ भण्डारा ॥
हीरा मोती लाल अपारा । पाट पटम्बर जर सब छारा ॥
जरे ऊंट अरु हस्ती घोरा । रानी देख कीन्ह बड शोरा ॥
राव साज वस्तु सब जरई । हाहा रानी रोवत फिरई ॥
और जरे औरो जर जाई । सुवा जरे हम बड दुख पाई ॥
बारह वर्ष सुवा को भयऊ । सुवा जले मम प्राणहि गयऊ ॥
राव शिकार ते फिरी अयऊ । देख्यो राजा सब जरि गयऊ ॥
राजा बूझे रानी बाता । मोसों कहो सुवा विख्याता ॥
पिंजरा सुवा जरा कै बांचा । सोई वचन कहो मोहिं सांचा ॥
यह सुनि रानी रोवन लागी । जर्‍यो सुवा भयो मोर अभागी ॥
सुनिके राय मोह बड लायी । सकल लोग कहँ लीन्ह बुलाई ॥
खोजो सुवा जाव सब कोई । देखत ताहि हर्षित मन होई ॥
सुनतहि लोग चले बहु धाये । डारेउ जल तब अग्नि बुझाये ॥

अवर सकल भये जर छारा। पिंजरा कहँ लागी नहिं झारा॥
पिंजरा भीतर सुवा रहायी। बोलत उहै वचन चितलायी॥
राजा रानी देखत धावा। हाथ सुवा गहि अंक लगावा॥
राजा रानी करै विचारा। यह तो कर्त्ता सिरजन हारा॥
रानी राव चरण लपटाये। नगर लोक सब देखन धाये॥
विनती राय कीन्ह तेहि वारा। सुनहु सुवा तुम वचन हमारा॥
बारह वर्ष रहे हम पासू। अपनी मता कहो निज आंसू॥
कै तुम करता पुरुष विदेही। कारण कौन धरी यह देही॥
द्रव्य जरेकी चिन्ता नाहीं। यह संशय व्यापा घटमाहीं॥
सबी जरचो कछू नहिं वांचा। तुम्हरी देह लगी नहिं आंचा॥
तातें तुम हम चीन्हा स्वामी। सत्य कहो भो अन्तर्यामी॥

सुवा वचन

बोल सुवा कहे सुन राजा। चेतहु नातर होत अकाजा॥
युगन युगन जग आयो राया। तुम्हरे काज लोक तें धाया॥
तै राजा बड मूर्ख गँवारा। तातें हम यह ख्याल पसारा॥
हम वट तर तुम द्वारे आई। कहेउ सगुनिया खबर पठाई॥
तब तेहि राजा मारण धावा। भाग सगुनिया हमलग आवा॥

साखी

धाय सगुनिया आयऊ, खबर कही हम पास॥
वेगी तहां ते हम चले, सरवर कीन्ह निवास॥

चौपाई

तेहिक्षण क्षितिया जलकहँ आई। लीला एक तहां हम लाई॥
सरवर भीतर गागर थम्भा। आगे डार धर ध्यान अरम्भा॥

---

१ आंसा। यहां आशय सिद्धांत से है अर्थात् राजा पूछता है कि तुम्हारा सिद्धांत क्या है सो मुझसे कहो। २ हो। ३ नहीं तो।

साखी वचन

एते ख्याल न चेतेऊ, तोहि बांध्यो यमराज ॥
नाम राय गहो तुम, नातरु होय अकाज ॥

चौपाई

जीव काज आये तुम द्वारा । तुम अचेत नहिं चेत भुवारा ॥
सुवा भेष हम महलन आवा । रत्न जडित पिंजरा तुम लावा ॥
राम राम तुम मोहि पढाई । हम कहै राय चेत यम आई ॥
अगम वचनको गम नहिं कीन्हा । यहि विधि तो हम परचो दीन्हा ॥
इतना ख्याल कान्ह यहि जागा । तौऊ न चेतहु बडे अभागा ॥

राजा बंग वचन

छंद–धाय राजा चरण गहे तुम पुरुष सिरजनहार हो ॥
हम देह नर अज्ञान हैं प्रभु हंसनायक सार हो ॥
आदि अंत अनादि पुरुष भाग बड दर्शन दियो ॥
करब आज्ञा शीश धरि हम आय सब अघ हर लियो ॥

सोरठा–कहो आपनो नाम, हंस वरण अब कीजिये ।
कौन द्वीप तुम गाँव, सुवा भेष तजि रूप धरु ॥

सतगुरु वाक्य–चौपाई

सुवा भेष तजि भयो निनारा । ततक्षण रूप आपनो धारा ॥
सुनहु वचन तुम राय हमारा । सत्यलोक तें हम पगु धारा ॥
नाम कबीर हमारा होई । तोकहँ बोधन आयो सोई ॥

राजा बंग वचन–चौपाई

देहु मुक्ति मोहिं नाम गोसाईं । हर्षित भयो रंक की नाईं ॥
पृथ्वी तज हम लोकहिं जायें । आदि पुरुष के दर्शन पायें ॥
ततक्षण राजा दूत पठाई । भांति भांति सोनार बोलायी ॥
कंचन महल बनायो राजा । शोभा ताहि अधिक छबि छाजा ॥

कंचन केर सिंहासन आही। हीरालाल लगे बहु ताही ॥
लाय सिंहासन तहां धरावा। छत्र चँदोवा सुभग तनावा ॥
साहेब लेय तहां बैठायो। रानी राय चरण लपटायो ॥
राजा औ दश रानी जानो। चतुर पुत्र तिन केर बखानो ॥
पुत्री पांच रूप अति शोभा। देख स्वरूप ताहि मन लोभा ॥
हीरांदे[1] जेठी तेहि रानी। कंचन झारी जल भरि आनी ॥
दूजी कनकदे तेहि नाऊं। माथ नवाय बैठे ढिग आऊं ॥
तीजी सुन्दरदे चलि आई। साहिब माथे फूल चढाई ॥
चौथी मणिकदे भल होती। ज्यों तारागण चमके ज्योती ॥
पंचम सत्य कुँवरि है नाऊं। हाथे पंखा वायु डुलाऊं ॥
छठवीं रानी लक्ष्मी नावा। चन्दन अगर घींसि करलावा ॥
रुक्मादे सप्तम जो रानी। मधुर वचन बोलत शुभ वानी ॥
सोनादे आठों चलि आई। साहिब चरन पलोटन लाई ॥
मुक्तिदेइ नवमी कर नामा। तिन सतगुरु कहँ कीन प्रणामा ॥
दशवीं सनकदे तेहि नाऊं। पग पग अन्तर वन्दन आऊं ॥
ग्यारहवीं थी जनक कुमारी। साहिब सों विनती चित धारी ॥
द्वादश रत्नादे कह दीन्हा। पल पल चरण केरि रज लीन्हा ॥
त्रयोदश मदनदेइ तेहि नामा। देखत तासु लज्जित हो कामा ॥
साहिब सों सब प्रीति लगाई। भक्ति भाव इच्छा बहुताई ॥
त्रोदश रानिन सो मत कियऊ। साहेब की गति जान न पायऊ ॥
प्रथमहि बेटी वरणि न जाई। हंस कुँवरि तेहि नाम कहाई ॥
दूजी बेटी रूप कुमारी। साहिब चरण गहे चित धारी ॥
तीजी मान कुँवरि तेहि नामा। दर्शन पाय भयो विश्रामा ॥

---

१ हीरादेवी का अपभ्रंश है देशी बोलीमें प्रायः स्त्रियोंके नामके साथ कुँवरि ओटदेवी आदि शब्द लगे रहते हैं वही देवी शब्द बोलनेमें कहीं तो "दे" कहीं "देई" आदि हो जाता है।

चौथे तारा कुँवरि बखानी । गुरु चरणनमें सो लपटानी ॥
पंचम कुशल कुवंरि तेहि रानी । बहुत स्वरूप अहहि बड ज्ञानी ॥
पुत्री पांच सुरति इक जाना । आगे कहुं पुत्र परमाणा ॥
चार पुत्र राजाके आगर । पांचो सुरति एक मत नागर ॥
प्रथमहि वत्सराज तेहि नाऊं । साहिब ऊपर चँवर ढराऊं ॥
दूजे कक्षराज तेहि नाऊं । सुमति सुधर्म वसे तेहि ठाऊं ॥
तीजे मेघराज बड ज्ञानी । पल पल चरण वन्द गुरु आनी ॥
चौथे तेजराज अब भाषो । साहिब केर चरण अभिलाषो ॥
चारौ चरण वन्दना कीन्हा । साहिब दर्श हर्ष चित लीन्हा ॥
आठ बहू तब ही चलि आई । साहिब चार कंठ हिय लाई ॥
येते जीव सुमति सब देखा । तासों तब हम वचन विशेषा ॥
तुम तो राव सुमति चित लावा । लघु दीरघ जीवन समुझावा ॥
तुम तो होहु थान सब लेहू । सुरति निरति चरणन चितदेहू ॥
राजा तबहि सिखावन माना । चौका सजकर कीन्ह प्रणामा ॥
चंदन घिस अरु महल लिपाई । अतर कपूर सुगन्ध धराई ॥
छत्र जडाऊ अति तहँ सोहा । दीवाल गिरी देखत मनमोहा ॥
मणिन जडित सिंहासन आई । मेवा अष्ट युक्ति सों लाई ॥
गज मोतिनकी चौक पुराई । कंगूरा सु हजार बनाई ॥
पीताम्बर धोती तहँ आना । सात हाथ के पान प्रमाणा ॥
तीन हाथ तिन की चकराई । श्वेत मिठाई तहां धराई ॥
हस्ती सम नरियर अस्थूला । एता कहूं के तोहि मूला ॥
आरति साट कंगूर करिया । चौका मध्य लाय सो धरिया ॥
साहब बैठ सिंहासन जबही । जगमग ज्योति भई अति तबही ॥
ततक्षण साज लोक से आवा । अनहद बाजे तहां बजावा ॥
पुत्री पुत्र बहु संग रानी । राय समेत बंदगी ठानी ॥

हाथ नारियल सबहिन लीन्हा। साहिबके आगे धर दीन्हा ॥
कीन्ह प्रणाम दंडवत लाई। बार बार चरणन लपटाई ॥
बहुत भांति सो चौका धारा। अनहद बाजे बाज अपारा ॥
तिनका तोरेउ जल तब लीन्हा। सीख पान सबहिन कहँ दीन्हा ॥
अभी भक्त राजा भल कीन्हा। भक्ति शिकारी मनमहँ दीन्हा ॥
सकल जीव कीन्हे परनामा। अब साहिब सुधरे सब कामा ॥
छंद-अति प्रेम राजा कीन्ह तब जब पाय पान परवान हो ॥
गद्गद गिरा तन पुलक होई तब विनय अस्तुति ठान हो ॥
हंस नायक परम लायक आय प्रभु दर्शन दियो ॥
काग पलट मराल कर भव सिन्धु बूडत गहि लियो ॥
सोरठा-सतगुरु चरण मयंक, जित चकोर नृप निरखही ॥
कीन्ह मोद निश्शंक, जरा मरण दुख मिट गयो ॥

सतगुरुवचन-चौपाई

राज वंग भल करनी लावा। राज गुमान सकल विसरावा ॥
अधम चाल सब दीन छुडाई। हंस चाल धर लोक सिधाई ॥
ऐसी भक्ति करे जो प्राणी। हंस होय निज शब्द समानी ॥
तीस जीव इकतीसो राजा। पाये नाम सुधर तिन काजा ॥
छंद-अमिय अंश जे पाय हंसा ते चले सतलोक हो ॥
ताहि काल न बाट रूंधत पहुँचहीं निःशोक हो ॥
ताहि बहिया संग चल इकतीस हंसन ले चले ॥
आर्य लोकमें पाय वासा पुरुषके दर्शन लये ॥
सोरठा-देख्यो लोक भुआर, सतगुरुके चरणन परे ॥
पाये रूप अपार, षोडश रवि लग अंग जित ॥
इति श्रीअम्बुसागरे तारणयुगकथावर्णनं नाम सप्तमस्तरंगः ॥

अथ अष्टमस्तरंगः

अखिलयुगकथावर्णन

चौपाई

धर्मदास के बन्दी छोरा। जीव अधर्मी कुटिल कठोरा॥
पतित उधारण नाम तुम्हारा। पतित जीव कहँ पार उतारा॥
तुम्हरी दया पाय प्रभु स्वामी। नर नारी होवे सुख धामी॥
अब कछु आगे भाषु सुनाऊ। सतपुरुष जनि मोहि दुराऊ॥
आगे ज्ञान कहो अनुसारी। जा विधि जीवन कीन्ह उबारी॥
कौन शब्द ले कालहि मारो। कौन शब्द ले हंस उबारो॥
कौन शब्द ले राखव पासा। कौन शब्द होवे जिव वासा॥

सतगुरु वचन–चौपाई

शब्द मलंग काल गहि मारा। सार शब्द ले जीव उबारा॥
सुरति डोरि ले राखब पासा। आर्य शब्द होवे जिव वासा॥
चार शब्दका भाषेउ भेदा। धर्मदास तुम कीन्ह निषेदा॥
बहुतक साध जायँ डहकाई। जीव काल कर भेद न पाई॥
योगाभ्यास जब उतपति कीन्हा। सर्व बीज प्रमाणा दीन्हा॥
सर्व बीज प्रमाणा आई। चौदह हाथ थान लंबाई॥
अठारह गागर केर जस गोरा। तादिन नरियल अस हम मोरा॥
युगहु अखिल दशलाख बखानी। द्वादश में जीवें भल प्राणी॥
नाम धनुष मुनि ऋषी रहाई। तहां जाय दीन्हा तिन पाई॥
गति तिन का भाषू परतीती। त्र्योदश सहस गये युग बीती॥
ऊर्द्धमुखी पंचाग्नि तपाये। प्राण पुरुष ब्रह्मांड चढाये॥
बैठे देह नयन अनि क्षीणा। साहिब देख बहुत बल हीना॥
तब हम ताहि बूझ चितलाये। केहि कारण तुम कष्ट कराये॥

का कर सेवा केहि जप करहू । काहि ध्यान अन्तर्गत धरहू ॥
सो तुम मोहिं सुनावहु भाई । अगम अगोचर भेद बताई ॥

धनुषमुनिवचन–चौपाई

मूल वस्तु कारण तप कीन्हा । अगम पुरुष सेवा चित दीन्हा ॥
अजपा जाप जपू चित लाई । सत अभ्यन्तर ध्यान धराई ॥
मर्कंडेय प्रलय हो जाहीं । धनुष मुनी देखत हम ताहीं ॥
उतपति प्रलय देखा बहु बारा । कीन्ह कष्ट नहिं सांच विचारा ॥

सतगुरु वचन–चौपाई

कीन्ह तपस्या कष्ट अपारा । तुम तो चोर कालके चारा ॥
तप तें राज नर्क है भाई । फिर फिर जन्म धरे भव आई ॥
बहुतक तपी भये संसारा । अन्तकाल यम कीन्ह अहारा ॥
मूल भेद तुम नाहिन जानी । कष्ट करत देही भव आनी ॥
वह साहिब नहिं कष्ट बतावा । सुखदाई हो अग्नि बुझावा ॥
होइ निष्कर्म नाम आराधो । सत्य भक्ति सतगुरु की साधो ॥
अमर लोक महँ पहुँचो जाई । आर्य पुरुषके दर्शन पाई ॥

धनुषमुनिवचन–चौपाई

तुम तो और लोक रचि लीन्हा । तप अरु योग झूठ सब कीन्हा ॥
और पुरुष तुम तहां बतावा । हमरे चित एकौ नहिं आवा ॥
लोक तुम्हारा मोहीं दिखाऊ । वचन तुम्हार सत्य मन आऊ ॥
तब मैं गहूं तुम्हारे चरणा । छूटे मोर जरा अरु मरणा ॥

सतगुरु वचन–चौपाई

यह सुनि साहिब चले रिंगाई । लेकर मुनि कहँ लोक सिधाई ॥
देखि दृष्टि हंसनकी पांती । युथ युथ हंस बैठे बहु भांती ॥

धनुषमुनि वचन–चौपाई

तब मुनि गहे धनी के पाऊ । अब साहब मोहि लोग दिखाऊ ॥

सुफल जन्म भयो कृतारथ । पावन कीन्ह भयो शुभ स्वारथ ॥
चलहु गोसाईं अब हम चीन्हा । देहु पान आपन कर लीन्हा ॥

सतगुरु वचन–चौपाई

मुनि कहँ लाय वेग भवसागर । ततक्षण शब्द गहे चित नागर ॥
माला ताहि गले महँ दीन्हा । श्रवण शरवणी बांधन लीन्हा ॥
यम सों तिनका तोरेउ भाई । हृदय शुद्ध करि पान पवाई ॥
धनुष मुनी लीन्हा परमाना । चाखत पारस कीन्ह पयाना ॥
काया त्याग जु दीन्ह रिंगाई । पुरुष लोक महँ बैठे जाई ॥
हँसहि हंस मिल सब संगा । शब्द पाय भये निर्मल अंगा ॥

धनुषमुनिवचन–चौपाई

चूक भूल अब मेटु हमारा । तुम जीवनके तारणहारा ॥
यह तो लोक अक्षय तुम राखा । अगमनिगम तेहि गम नहिं भाषा ॥
सुर नर मुनि कोई नहिं पावे । तीन लोक जिव काल फँसावे ॥
दुनियां माया मोह फँदाना । राग रंग निशि वासर साना ॥
तबहुँ न चेतत मूढि गँवारा । पकडि पकडि यम मारे धारा ॥
निर्गुण नाम भाषि तुम दीन्हा । ताहि नाम बिरले कोइ चीन्हा ॥
तीनों गुणका बड़ा पसारा । जप तप योग यज्ञ मन धारा ॥
पुरुष भक्ति कोई नहिं जाने । आप आपको ब्रह्म बखाने ॥
घट महँ काल विषय वट पारा । कैसे हंस पहुँचे दरबारा ॥
लोक लोक भाषें नर लोई । लोक मर्म जाने नहिं कोई ॥

दोहा–धन्य नारि अरु नाम धनि, सर्व बीज निज आन ।
जा प्रतापतें लोक महँ, पहुँचे पुरुष ठिकाण ॥

चौपाई

नरियल उतपति मोहिं सुनाओ । कैसे वृक्ष ताहि निर्माओ ॥

सतगुरु–वचन

निगम दीपते नरियल आया । दीप संदली गुप्त रहाया ॥

जलखंडी तहँ वासा लीन्हा। तहँवां जाय गम्य हम कीन्हा ॥
जलखंडी कहँ मारा जबहीं। ताहि देह मथि काढेउ तबहीं ॥
तब नारियल हम आन जुगावा। यत्न यत्न सों वृक्ष बनावा ॥
प्रथम वृक्ष फल लागे पांचा। सत्य सत्य मानो तुम साचा ॥
पहिलहि फल बांधो कहँ आवा। धर्मदास के हाथ धरावा ॥
जम्बु द्वीप थान बैठाई। देहि पान तब पन्थ चलाई ॥
उत्तर दिश तिनकी गुरुवाई। तहां चाल रुग्वेद चलाई ॥
वंश बयालिस तिन के सारा। हंसन खेल उतारहि पारा ॥
कोटि वाणी हम तिनकहँ दीन्हा। जगत जीव कहँ निर्मल कीन्हा ॥
दूजे फल बंकेजी पावा। करनाटक महँ पंथ चलावा ॥
प्लास द्वीप तिन की गुरुवाई। बहुत जीव तिन्ह लेहि बचाई ॥
पूरव दिशा ताहि बैठारा। यजुर्वेद तहँ मता पसारा ॥
वंश सताइस तिन के जाना। वाणी तिन टकसाल बखाना ॥
कर्नाटक इक शहर अपारा। तहां बैठि तिन ज्ञान पसारा ॥
तीजे फल मणिपुर तब जाई। सहतेजी के हाथ धराई ॥
शाल्मलि द्वीप ताहि करनामा। पश्चिम दिशा अहै सो ठामा ॥
तहवां मता अथर्वण वेदा। सात वंश तिन कहुं निषेदा ॥
बीजक वाणी पंथ चलावे। सार शब्द दे हंस बचावे ॥
चौथा फल दरभंगा जाई। राय चतुर्भुज हाथ धराई ॥
कुशा द्वीप तिनका बिस्तारा। दक्षिण दिशा ताहि बैठारा ॥
साम वेद मारग तहँ जानी। षोडश तिन के वंश बखानी ॥
वाणी मूल ताहि हम दीन्हा। सकल हंस आपन कर लीन्हा ॥
पांचएँ फल हैं हमरे पासा। लोक बैठि चौका परकाशा ॥
वाणी आर्य हंस कहँ दीन्हा। सकल हंस आपन कर लीन्हा ॥
जब जब हम संसारहि आये। वाणी लाय हंस मुक्ताये ॥
वीरा नाम हंस जिन पावा। सोई हंस लोक पहुँचावा ॥

यही नाम है अगम अपारा। जाने जीव उतर भव पारा ॥
छंद-जगत घर घर गुरु कहावत कालके बन्धन परे ॥
शिष गुरू दोई डाल फांसी विषम सरवर ते जरे ॥
चार गुरू संसार हैं यम तासु निकट न आवई ॥
ताहि गुरू जिन पाव वीरा काल शिर तेहि नावई ॥
सोरठा-बहुत गुरू संसार, ठांव ठांव भर्मत फिरे ॥
जाग्रत गुरू हमार, ताहि काल देखत डरे ॥

इति श्रीअम्बुसागरे अखिलयुगकथावर्णनं नाम अष्टमस्तरंगः।

अथ नवमस्तरंगः

विश्वा युगकथा वर्णन

धर्मदासवचन-चौपाई

यह सुनि धर्मदास विहँसाना। धाय धरे जिमि रंक समाना ॥
धरे न धीर चक्षु चल वारी। बार बार चरणन चित धारी ॥
भयो अधीन अधिक मनमोहा। तरुण उदय पंकज जिमि सोहा ॥
मोहि अधम तुम कीन्ह कृतारथ। और गुरू लागे केहि स्वारथ ॥
आगे आनी मोहिं सुनाओ। आपन जान मोहिं चेताओ ॥

सतगुरु वचन-चौपाई

धर्मदास बूझो तुम ज्ञाता। सकल कथा भाषू विख्याता ॥
भासूं विश्वा युग परभाऊ। पुरुष आज्ञा निकट बुलाऊ ॥
आर्य द्वीप पुरुष रहिवासा। ततक्षण गये तहां हम पासा ॥
तहवां जाय गम्य हम कीन्हा। आदि पुरुष जहँ बैठक लीन्हा ॥
आसन मार बैठे तहँ आपू। दर्शन पाय छुटा त्रै तापू ॥
कला अनन्त रूप अधिकाई। कोटिन रवि एक चिकुर लजाई ॥
प्रथम अवाज पुरुष अनुसारा। माया पास जाय शठहारा ॥
तीन लोक माया कर वासा। जीवन फांस डारि करे त्रासा ॥

ताकी खबर लेहु तुम जाई। तीन लोकमहँ अदल चलाई ॥

शठहार वचन–चौपाई

तब शठहार विनय उठ कीन्हा। साहब आज्ञा हम कहँ दीन्हा ॥
माया लग हम जाय सिधाई। वस्तु आपनी कहो बुझाई ॥
होय अधीन जाहि तें माया। सो साहब कीजे मोहिं दाया ॥

पुरुष उवाच–चौपाई

शब्द हमार धरौ चितलाई। यही तत्त्व माया मुरझाई ॥
जाहु वेगि जनि लावहु बारा। जीवन कष्ट भयो अधिकारा ॥

शठहार वचन–चौपाई

परम पुरुष जब वचन उचारा। ततक्षण गै माया के द्वारा ॥
ताहि द्वार गण बैठि रहाये। माया सों तब जाय जनाये ॥
देवी ततक्षण लीन्ह बुलाई। तब शठिहार बैठ तहँ जाई ॥

देवीवचन–चौपाई

बूझे देवी मन चित लायस। कौन देश शठिहार रहायस ॥
कौन पुरुष तुम कहँ पठावा। सो तुम हम कहँ वचन सुनावा ॥

शठहार वचन–चौपाई

कह शठिहार सुनो तुम माया। सत्यलोक तें मैं चलि आया ॥
पुरुष मोहि ढिग तोर पठाये। तुम तो चपल सकल जग खाये॥
जीव जोर कर धर धर मारा। फन्द लगाय पकर यम द्वारा ॥
जबहि दशहरा आवे भाई। भैंसा बकरा तहां कटाई ॥
फन्द अनेकन सकल फँदाना। मूरख जीव शब्द नहिं माना ॥
तुम तो आहु पुरुष के चोरो। पल महँ बांध रसातल बोरो ॥

देवी वचन–चौपाई

कह देवी तू कैसे बोले। शक्ति हमारी घर घर डोले ॥
पुरुष तुम्हार मैं नाहीं डरऊं। तीनों लोक पांव तर धरऊं ॥

तुम कहँ मारूं चापूं हेठा । तीन लोक पसरे मम देठा ॥
ब्रह्मा विष्णु हाथ सब मोरे । शिव सनकादिक केवल तोरे ॥
चौंसठ लाख कामिनि होई । मेरे अंग बेहर सब कोई ॥
तुम रे दुष्ट कहां चलि आवा । केहि कारण तें पुरुष पठावा ॥
नाम गुनाम कहो शठिहारा । हमरे चित डर नाहिं तुम्हारा ॥
खपर हाथ मम भुजा अनन्ता । अपने वश कीन्हो भगवन्ता ॥
हम पर धनी और नहिं आना । तीन लोक मम नाम बखाना ॥
तुम क्या गर्व करहु रे भाई । कहो लोक मैं देहु खसाई ॥
तुरतहि रूप अनेकन धारों । लोक तुम्हार रसातल डारों ॥

शठहार वचन–चौपाई

कह शठहार सुनी श्री माया । काहे तुम मति गयी भुलाया ॥
जा दिन आदि अन्त नहिं जोती । ता दिन जन्म कहां तुव होती ॥
पुरुष अकार कहो जग जानी । शब्द डोरि तेहि बांधो तानी ॥
कामिनी तोहि करूं जरि क्षारी । सकल हंस कहँ लेहुँ उबारी ॥
आदि पुरुष कहँ तू कस मोटी । छोडेउ पुरुष काल उर भेंटी ॥
अस जिन जानहु सकल हमारा । देहों शाप होइ हो जरि क्षारा ॥
हम तो सत्यलोक तें आवा । देवी तुम्हारा ज्ञान हिरावा ॥
कीन्हीं पुरुष तबै तुम भयऊ । तीनहु लोक बख्श तोहि दयऊ ॥
तें जानसी सब मैं ही कीन्हा । पुरुष नाम तुम नाहिं न चीन्हा ॥
अलख निरंजन देवी राता । विधि हरिहरका करि है घाता ॥
महा प्रलय होवे तेहि बारा । तब जर वर सब होवे क्षारा ॥
तीनों लोक प्रलय तर जायी । तब अद्या तुम कहा रहायी ॥
उन सन्तों कहँ कौन गुमाना । जिनका चलत जगत में पाना ॥
आदि पुरुष तुम्हरे हैं ताता । अद्या भयो निरंजन भ्राता ॥
ताहि तात को छोडहु संगा । भ्राता जार कीन्ह अरधंगा ॥

ताहि रंग ते गई भुलायी । छोडेउ पुरुष जार मन लायी ॥
निशि वासर कीन्हा पिय नेहा । कामरूप कामिनि मति देहा ॥
तुच्छ बुद्धि नारी तुव बाता । यही चाल जग नार समाता ॥

देवी वचन

यह सुनि माया बहुत लजाई । धरि सिंहासन तब बैठाई ॥
वचन हमार सुनो शठहारा । नाम जपे तेहि हंस उबारा ॥
हम पुत्री पुरुष के आहू । शब्द डोर हंसन ले जाहू ॥
जो कोउ नाम तुम्हार सुनाये । शीश हमार पांव दे जाये ॥
चौंसठ युग हम सेवा कीन्हा । पृथ्वी बख्श पुरुष मोहिं दीन्हा ॥
तीन लोक हम मरदो माना । कैसे हंसा लोक पयाना ॥

सतगुरुवचन–चौपाई

कह शठिहार सुनो तुम बाता । सकल जीव कीन्हेउ तुम घाता ॥
जो कोउ जीव हमारा होई । ताके निकट जाय जिनि सोई ॥
जो घट शब्द हमार समाये । ता घट काल निकट नहिं आये ॥

देवी वचन–चौपाई

तात वचन लाये शठि-हारा । को मेटे यह वचन अपारा ॥
हठकर वचन मेटि मैं डारा । तौ हम भयी लोक तें न्यारा ॥
जे जिव पुरुष नाम चित राता । ताहि हंस नहिं बोल बताता ॥
अंक तुम्हार पान जो पाई । देवी देव देख शिर नाई ॥
भीतर करता बहुत गुमाना । ताकर जीव करब हम हाना ॥
गुरुसों मन चित अन्तर राखा । साधु सन्त सों दुर्मति भाखा ॥
ते जिव हमरे खपर भराई । बार बार चौरासी नाई ॥
नाम तुम्हार कोई नहिं जाना । सकल जीव हमही लपटाना ॥
मुक्त मुक्त भाषत सब प्राणी । मुक्तहि नाम प्रमाण सुजानी ॥
मो कहँ और न जानत दूजा । निश दिन हमचित तुम्हरी पूजा ॥

सार नाम जिन पाव तुम्हारा। सो पहुँचे पुरुष दरबारा ॥
ताहि हंस हम रोकब सोई। द्रोही पुरुष केर हम होई ॥

शठहारवचन–चौपाई

विश्वा युग चर्चा हम कीन्हा। या नर तन गिर जीवन दीन्हा ॥
तूर बराबर नरियल जाना। चार हाथ लम्बा रह पाना ॥
हाथ दोय करके चकराई। ऐसा युग हम पान बनाई ॥
बीस लाख युग आयु बखाना। वर्ष सहस मानुष तन जाना ॥
अडसठ हाथ ऊँचाई होई। ऐसे नर सकलों सब कोई ॥
सात सहस्र पाय जो पाना। सत्य शब्द निश्चय कर माना ॥
पुरुष दर्श तिन जीव कराई। देवी वचन कहा समुझाई ॥
छंद–यह चरित कर शठहार ततक्षण पुरुषा के दर्शन लहे ॥
कीन्ह माया वाद बहु विधि चरण हमार निश्चय गहे ॥
विश्व युग में जाय के हम हंस कीन्ह उबार हो ॥
सहस सात जिव पाय बीरा आय लोक मँझार हो ॥
सोरठा–पुरुष कीन्ह अवाज, भल तुम कीन्हेउ अंश मम ॥
हंसन के सरताज, माया गर्व नशायऊ ॥

इति श्रीअम्बुसागरे विश्वायुगकथावर्णनं नाम नवमस्तरंगः।

अथ दशमस्तरंगः

अक्षयतरुण युगकथा वर्णन

धर्मदास वचन–चौपाई

धन्य भाग हम सतगुरु भेंटा। भवसागर का संशय मेटा ॥
कथा अनूप मोहि समुझाई। सुनत चित्त मम अति सुख पाई॥
अमृतवचनमोहिअतिप्रियलागा। चरण कमल तू हिय अनुरागा ॥
तुम पद पंकज मुकुर सुधारा। अमियवचनसुनकलिमलटारा॥
वचन तुम्हार आहि अतिपावन। कीन्ह सनाथ मोहि मन भावन ॥

तीनहु तपन बुझायहु मोरी । होय दयाल कहो कुछ ओरी ॥
युग युग जीवन दर्शन दीन्हा । अधम जीव पावन कर लीन्हा ॥
दास जानि कहिये प्रभुराई । धर्मदास टेके तब पाई ॥

सतगुरुवचन–चौपाई

धर्मदास तुम मति के आगर । पुरुष अंश तुम अहहु उजागर ॥
सुकृत अंश अहो धर्मदासू । हंसन के तुम हौ सुखरासू ॥
तुम बूझो जीवन के काजा । गहि सत शब्द छोडि कुल लाजा ॥
जो तुम बूझो हंसन धामा । पुष्प द्वीप पुरुष विश्रामा ॥
अभ्यन्तर हो कीन्ह निवासा । तहवां पूरुष वचन प्रकाशा ॥
तब ज्ञानी कहँ लीन्ह बुलावा । आयसु देई संसार पठावा ॥
अक्षय तरुण युग दीन्ह रिंगाये । चलि जलरंग लागि हम आये ॥
तिममें एक असंख्य उँचाई । अक्षय द्वीप जहँ कूर्म रहाई ॥
वाही कूर्म ध्यान तहँ धरई । प्रथम पुरुष का सुमिरन करई ॥
द्वादश पालँग ताहि शरीरा । कच्छ रूप धरि बैठे नीरा ॥
सोलह माथा चौंसठ पाई । तहँवा पहुँचे जाय गुसाईं ॥

कूर्म उवाच

बूझे कूर्म कौन तुम आहू । सत्य वचन सो मोहिं सुनाहू ॥
के तुम आप पुरुष चलि आये । अंश रूप धरि वर्ण छिपाये ॥
हम पाताल बैठे जल माहीं । ध्यान पुरुषकी सदा कराहीं ॥

ज्ञानी वचन–चौपाई

ज्ञानी कहे कूर्म सुनु बाता । तुमसों सत्य कहूं विख्याता ॥
हंसन हेत काज उपराजा । पुरुष मोहि पठये जिव काजा ॥
तब हम आय यहां पग दीन्हा । द्वीप तुम्हारा देखन लीन्हा ॥
कहो पताल करे अब बाता । तुम सब जानत हो उतपाता ॥
कौन द्वीप कमल का फूला । कौन द्वीप काल का मूला ॥

कौन द्वीप जलखंडी वासा । कौन द्वीप माया परकाशा ॥
कौन द्वीप कूर्म बैठारा । कौन अंश तहँ करत विहारा ॥
दोहा—आदि अंत तोहि बूझेउ, कहो कूर्म समझाय ॥
सत्य सत्य मोसों कहो, चित संशय मिट जाय ॥

कूर्म वचन—चौपाई

कहे कूर्म बूझो भल ज्ञानी । द्वीप द्वीप भाषूं सहिदानी ॥
पूरुष द्वीप कमलका फूला । तहँवां भयो काल अस्थूला ॥
जलखंडी रह संदलं द्वीपा । भव माया हो रही समीपा ॥
अक्षयद्वीपमहँ हम भला रहिया । हमइस खंड पिण्डपर धरिया ॥
हमरे नीचे गहरु गँभीरा । तहवां डोरी शत अस्थीरा ॥
तेहि चौकी बैठे जल रंगू । जल शोभा तहँ उठत तरंगू ॥
हम जाना सो दीन्ह बतायी । सोइ कथा हम भाष सुनायी ॥

ज्ञानी वचन—चौपाई

ज्ञानी कहे कूर्म सों बाता । और मोहिं भाषो विख्याता ॥
तुम पर काल कीन्ह कस रचना । सो मोहिं कूर्म कहो दृढ बचना ॥

कूर्म वचन—चौपाई

तुम कहँ ज्ञानी सब कुछ सूझा । जानहु आदि अन्त मोहिं बूझा ॥
चार अंश जलखंडी कीन्हा । रचना ताहि अपन कर लीन्हा ॥
हम पर मीन रूप निरमावा । ता पर कच्छ रूप बैठावा ॥
कच्छ पीठ पर कीन्ह बराहू । आगे सहस फणहि तहँ आहू ॥
तापर महि की रचना कीन्हा । गिरि सुमेरु तब भार तेहि दीन्हा ॥
दशहु दिशा दिग्पाल लगाई । सूंड लाय तिन मही उठाई ॥
एतक कालहि रच्यो प्रचंडा । महिमा सात द्वीप नव खंडा ॥
लेत करौंटा जेहि पल हमहीं । नीच गगन ऊंची भुवि तबहीं ॥

---

१ इस शब्दमें सन्देह है । जितनी प्रति हैं सबमें गड-बड है ।

उलट पलट परलय हो जाई। तीन लोक जलमाहिं समाई ॥
हम तो चीन्ह पुरुष तुम आपू। देहू पान मिटे सन्तापू ॥

चौदह यमका नाम

ज्ञानी वचन–चौपाई

इतना सुन ज्ञानी विहसाई। अब तुमसों कछु नाहिं छिपाई ॥
अक्षय पान वीरा लिख दीन्हा। शीशहि नाय कूर्म तब लीन्हा ॥
अस्तुति कीन्ह बहुत चितलाई। धन्य भाग मोहिं दरश दिखाई ॥
तुम तो पुरुष आहु अविनाशी। सत्य गुरू सत्यलोक निवासी ॥
ज्ञानी दीन्ह वचन तोहि बारा। कूर्म चाल जेहि जीव मँझारा ॥
ताहि जीव हम लोग पठाउब। सोई हंस काल नहिं पाउब ॥
चल ज्ञानी तहँवां ते आगे। चौदह यम बैठे अनुरागे ॥
कलिमल द्वीप नाम तेहि राखा। कच्छप लोग वेद तेहि भाषा ॥
साहब तहां जाय गम कीन्हा। चौदह यम सों बोलन लीन्हा ॥
कौन कौन तुम यम रे भाई। आपन नाम कहो समझाई ॥

यमवचन–चौपाई

तब यम आपन नाम बतावा। एक एक करि वर्ण सुनावा ॥
प्रथमहि नाम कहा मृत्यु अंधा। दूजा यम है क्रोधित अंधा ॥
तीजा यम दुर्ग अभिमाना। चौथे मन मकरन्द बखाना ॥
पांचों नाम अहै चितचंचल। छठां यम तेहि नाम अपरबल ॥
सप्तम अन्ध अचेत बताई। अष्टम कर्म रेष यम आई ॥
नवमें अग्नि घंट वरियारा। दशवें कालसेन विकरारा ॥
ग्यारहे मनसा मूल बताई। द्वादश यम भय भीत रहाई ॥
त्र्योदश नाम तालुका ताही। सुर संहार चतुर्दश आही ॥

ज्ञानी वचन–चौपाई

चौदह यमन पकडी हम लीन्हा। बहुत पुकार करन तिन्ह कीन्हा ॥

तब देखा दूतन कहँ जाई। चौरासी कहँ कुण्ड बनाई॥
कुण्ड कुण्ड बैठे यमदूता। देत जीव कहँ कष्ट बहूता॥
तहां जाय हम ठाढ रहावा। देखत जीव विनय तब लावा॥

कंडहार वचन-चौपाई

मारत जीव करे बडशोरा। बांध बांध कुण्डनमें बोरा॥
लाख अठाइस पडे कडिहारा। बहुत कष्ट तहँ करत पुकारा॥
हम भूले स्वारथ के संगी। अब हमरे नाहीं अर्धंगी॥
हम तो मरत अग्निके झारा। अंग अंग सब जरत हमारा॥
कौन पुरुष अब राखे आई। करत गुहार चक्षु ढल जाई॥

ज्ञानी वचन-चौपाई

करुणा देख दया दिल आवा। अरे दूत त्रास भास दिखावा॥
जीव अचेत भये अज्ञाना। गहे शब्द अति कीन्ह गुमाना॥
चौरासी दूतन कहँ बांधा। शब्द डोर चौदह यम सांधा॥
तब ज्ञानी सबहिन कहँ मारा। तुम तो जीवनके वटपारा॥
हमरे साधन तुम भरमावा। पल पल सुरति जीव बगडावा॥
गहि चोटी दूतन घिसियाये। यम अरु दूत विनय तब लाये॥

दूत वचन-चौपाई

चूक हमारि बख्श कर लीजे। मन माने तस आज्ञा कीजे॥
हम तो धनी कहे जस कीन्हा। सो हम वचन मान शिर लीन्हा॥
अब नहिं हंस तुम्हार विगारव। नाम गहे सो लोक सिधारव॥
विनती कीन्ह करे बड शोरा। हमतो नाहिं करत कछु जोरा॥
जस चाहो कीजे तस ज्ञानी। हम तो हाथ तुम्हार बिकानी॥

ज्ञानी वचन-चौपाई

तुम ज्ञानी बहुते हरषाई। दूतन बंधन छोरो जाई॥
फल इक जीवन सुखकर दीन्हा। तब संसार गमन हम कीन्हा॥

अक्षय तरुण युग हम चलि आवा। अक्षय नाम वीरा जिह लावा ॥
जीव आय बोधेउ भवसागर। वीरा दीन्ह हंस भये आगर ॥
पांच सो लाख पाय परवाना। सकल हंस लै लोक सिधाना ॥

छंद–हंस ले ज्ञानी चले जहँ पुरुष आप विराजहीं ॥
हंस हंसन कर कुतूहल पुरुष केवल गाजहीं ॥
अमर पुरुष विनय इक हम मार कालहि अति बली ॥
तुम पद्म परताप तें यम दूत गहि हम दलमली ॥

सोरठा–हंसन कीन्ह उबार, ले आयो अमरापुरी ॥
पाये दरश तुम्हार, हंस रूप तिनको भयो ॥

इति श्रीअम्बुसागरे अक्षयतरुणयुगकथावर्णनो नाम दशमस्तरंगः।

अथ एकादशस्तरंगः

नन्दीयुगकथा वर्णन

चौपाई

धर्मदास हर्षित मन कैसे। गगन तरू पंकज लख जैसे ॥
तुम पराग सर मज्जन करही। पुनिविनश्रमभवनिधिकहँतरही॥
हमहि दयाल दयाकर ऐसे। जिमि कराल पारस मिल तैसे ॥
वचन तुम्हार सुधाको सागर। श्रवण करत निर्मल मति आगर॥
श्रवणकरत कलिमल इमि भागा। चन्दन विरह वचन फणि त्यागा॥
चितवन तुम्हरे पद अब लागू। आशा उभयन है अनुरागू ॥
आगे औरहु वर्णन कीजे। तृषावन्त कहँ अमी चखीजे ॥

सतगुरुवचन–चौपाई

धर्मदास तुम मति के पूरा। तुम कहँ देखि काल हो दूरा ॥
हम तुम सो इमि रहें समाई। सुमन सुगंध रहा जिमि छाई ॥

पुष्प सुगंध प्रगट किमि होई । धमनि सुनो युक्ति इक सोई ॥
प्रथमहिं द्रव्य देय तिल लाये । कंकर नाखि ताहि फटकाये ॥
देह कष्ट पुनि मीज बहूता । सेतु बनाय छुडाये छूता ॥
कलिमल हरण ताहि करडारा । मज्जन करतेहि निकर सुधारा ॥
उत्तम कुम्भ सु तहां मँगाये । प्रीति अनेक सुमन तिललाये ॥
पुष्प तिलो संगम जब कीन्हा । कोल्हू माहि पिरावन लीन्हा ॥
नाम फुलेल वासन संगा । एतक कष्ट सहा दुख अंगा ॥
अससिख सतगुरु पद अनुरागा । माया मोह सकल चित त्यागा ॥
तिनहू तपन बुझायो जाका । काल अब जिव रोमन बांका ॥
तुम हो सुमन प्राण हम जैसे । शब्द बनावत तिल जिव तैसे ॥
शब्द कहे सतगुरु जी भेंटे । गुरू संग शिष वास लपेटे ॥
कोल्हू भक्ति गुरू की आगर । सुरति समय पहुँचे सुखसागर ॥
ऐसी चाल सीख जो आवा । हँसत राम लग वासा पावा ॥
युग युग थीर भये नहिं आवत । सतगुरु हाथ पान जिव पावत ॥
युग नन्दी हम दीन पयाना । पुरुष आयुसु जगत सिधाना ॥
क्रौंच द्वीप महँ पहुँचो जाई । तहां काल दधि सिंध बनाई ॥
तहँवां एक हंस निर्वाणा । तिनको गोष्टि तहां हम ठाना ॥
बैठि अरम्भ गुफा अनुरागा । माया मोह छोड चित भागा ॥
नाम गुप्त मुनि तहां रहाये । दृष्टि मूंदि ध्यानहि मन लाये ॥
तहँवां निकट बैठ हम जाका । खोसि चक्षु मुनि हम कहँ ताका ॥
बूझे मुनि तुम को हो भाई । आपन नाम कहो समझाई ॥
सुंदर रूप अधिक अति शोभा । देखत रूप उठत अति लोभा ॥
अंग अंग देखा चमकारा । शोभितमनु जिमिअगमअपारा ॥
कोटि वर्ष इहवां तप कीन्हा । ऐसा रूप न कबहूँ चीन्हा ॥
अब तुम कहो आपनो नामा । कौनेहि देश वसो केहि ग्रामा ॥

सतगुरुवचन-चौपाई

तब हम मुनिको भेद बतावा । सत्यलोकको संदेश सुनावा ॥
सुनत सन्देश अती मन लोभा । देखनसत्यलोककीन्हसो छोभा॥
बहुत विनती गुप्तमुनि लाये । बहुतहिं बिलखि वचन सुनाये ॥
तब हम ताहि बहुविधि जांचा । सब विधि तेहि पाये मैं सांचा ॥
ज्यों ज्यों जाचों त्यों त्यों लोभे । छूटे यमफाँस बढे बहु शोभे ॥
बहुविधि ताही शब्द सुनावा । काल जाल सब दूर बहावा ॥
देखि अधीन शब्द मुनि पागा । तब ले चल्यो ताहि वहि जागा ॥
प्रथम दिखायो मान सरोवर । सकल कामिनी एक बरोबर ॥
चारभानु जिमि अंग लपेटा । करहिं कुतूहल युथ युथ भेंटा ॥
मान सरोवर देखि तडागू । सिढी सिढी रवि शशि जनु लागू ॥
ता जल देखत जीव जुडाना । उठत तरंग पूर जिमि भाना ॥
तहँवां कामिनि मज्जन करई । मज्जन करत रूप बड धरई ॥
कामिनि खंड महा अति पावन । युथ युथ बैठ राग तहँ गावन ॥

गुप्तमुनिवचन-चौपाई

यह छबि देख कीन्ह मन लोभा । व्याकुलभयो चित्त लखि शोभा॥
नाना भांति फूल फुलवारी । जिमि उडुगण रवि रचि बैठारी ॥
देखि दृष्टि पद तब लिपटाना । जस जल पाय मीन मन माना ॥
करहु अनुग्रह अब नहिं जाइब । ऐसो ठांव बहुर नहिं आइब ॥

सतगुरुवचन-चौपाई

जब लग पुरुष नाम नहिं भेंटी । तब लग काल त्रास महिं मेटी ॥
अब तुम चलो अपने ठामा । पावहु आदि पुरुष विश्रामा ॥
सतगुरु मुनि आये जब तहियां । गुप्त मुनी आपन रह जहियां ॥
गुप्त मुनि निर्गुण सर्गुण भाषा । हे प्रभु श्रवण सुनत अभिलाषा ॥
कौन ज्ञान ते तुम कहँ पायब । सतगुरु ताहि मुक्त फरमायब ॥

सतगुरुवचन–चौपाई

निर्गुण ज्ञान मुक्ति का वासा । सर्गुण ज्ञान शरीर प्रकाशा ॥
सर्गुण ज्ञान खबर हम पावा । निर्गुण ज्ञान मोहिं चित भावा ॥
सर्गुण नाम अनन्त बतावत । निर्गुण माहिं रहित घर पावत ॥
सर्गुण नाम सकल संसारा । निर्गुण है इक नाम हमारा ॥
सर्गुण नाम काल भरमावे । निर्गुण नाम हंस घर आवे ॥
सर्गुण निर्गुण रहे अकेला । ताके संग गुरू नहिं चेला ॥
मारग झीन सुनो मुनि ज्ञानी । मकरतार लगावत तानी ॥
गुप्त मुनी को चौका कीन्हा । लिखिके पान तुर्त हम दीन्हा ॥
युगनन्दी की आयु बखानी । एक करोर वर्ष परमानी ॥
मानुष आयु सहस रह तीनी । तहां गुप्त मुनि भये अधीनी ॥
सतगुरु मुनि ले चले डोरी । टूटत घाट अठासी क्रोरी ॥
देखत मुनि हंसन युथ आवा । सकल साज मंगल भल गावा ॥
अनहद बाजा बाजन लागू । मंगल भांति भांति उठ रागू ॥
हंस परछि संग कर लीन्हा । धन्य हंस सतगुरु भल चीन्हा ॥
विषय वासना छोड भगीता । चरण प्रताप काल तुम जीता ॥

छंद–जलहलखंडी अति विहंडी त्रिगुण दाहत अति भली ॥
रूप माया खण्डी काया जीव सब गहि दलमली ॥
वीर हंसा भाग वांचे नाम जिन शिर नग गहीं ॥
काल त्रास न ताहि व्यापत पुरुष के दर्शन लहीं ॥

सोरठा–पाये पुरुष अवाज, हंस दर्श ततक्षण भये ॥
बैठे हंस समाज, भुक्तत निर्भय ह्वै सकल ॥

इति श्रीअम्बुसागरे नन्दीयुगकथावर्णनो नाम एकादशस्तरंगः ।

अथ द्वादशस्तरंगः

हिंडोल युग कथा वर्णन

चौपाई

धर्मदास बोले मृदु वाणी। तुम तो आप पुरुष हो ज्ञानी॥
भल हम श्रवण सुना विख्याता। मृदुल मंजु पद गहु शुनि ज्ञाता॥
पंकज गहि विनु श्रम भव तरिया। और जीव काल मुख परिया॥
इक सुख पद्म का वर्णन करऊँ। समझ विचार अपन चित रहऊँ॥
जस गूँगा सपना लखि आवा। सुमिरि सुमिरि मन मन पछितावा॥
पाय राज अरु हस्ती घोरा। मन्दिर कनक नारि संग जोरा॥
भयो भोर तब देख निहारी। कहँवां राज पाट अरु नारी॥
समझ समझ मन व्याकुल होई। कहँवा राज पाट सुख सोई॥
कासों कहूं विपति को बाता। ऐसे मन मन मनहिं सिहाता॥
जिन जाना तिनहीं पहिचाना। दूजा नहिं और हित माना॥
जाना तिन जेहि तुम्हरी दाया। प्रबलकाल तेहि निकट न आया॥
रहे अचेत चेत नहिं कीन्हा। वचन सुधा पावन कर लीन्हा॥
कथा कहो अरु हंसन राई। ज्यों युग जीव की ह मुकताई॥

सतगुरु वचन—चौपाई

द्वीप असंख्य जु लोक निवासा। जहँवां हंसन केर विलासा॥
आयसु पुरुष कीन्ह जब ज्ञानी। वेग जाव जग जीवन आनी॥
मस्तक नाय चले तेहि बारा। पहुंचे वेग आये संसारा॥
युग हिंडोल महँ आये आपा। भाषेउ शब्द आर्य की छापा॥
हम तो जीवन सत्य बखाना। जान बूझि जिव भांति भुलाना॥
हम तो सत्य शब्द मनमाने। जीव झूंठ जिन मर्म न जाने॥
ता कहँ कहा करब रे भाई। सत्य ज्ञान चित नाहिं समाई॥
वाणी मुक्ति जीव नहिं पावत। फिर फिर काल ताहि डहकावत॥
कैसे जीव होय निश्शंका। माया कठिन फांस तेहि वंका॥

धर्मदास हम घर घर डोला । कोई जीव नाहिं मुख बोला ॥
बूझो सातो शब्द कहुँ हमारा । विष अमृत है एक मँझारा ॥
सो तोहि भाषों हो टकसारा । विष अमृत का करु निर्वारा ॥
हंस होय तेहि न्यारा करहु । नातरु काल जाल महँ परहु ॥
अमृत पाय अमर जब होई । ऐसा अगम शब्द है सोई ॥
पानी सम अमृत जिनि जानो । शब्द अमी हम ज्ञान बखानो ॥
शब्द ज्ञान है कठिन अपारा । ज्ञानी पण्डित करहु विचारा ॥
शब्द चोट है राजत राजू । शब्द चीन्ह सुधरत जिव काजू ॥
शब्द डोर हंसा निश्शंका । शब्द डोर हो हंसा रंका ॥
शब्दहि ते सब रचना कीन्हा । शब्द पुरुष मुख भाषण लीन्हा ॥
सोई शब्द हंसा वर पावा । शब्द गहे ओ लोक सिधावा ॥
मूरख जीव शब्द नहिं माना । शब्द सुनत मोहि झगरा ठाना ॥

साखी—मूरख शब्द न मानहीं, धर्म न सुने विचार ।
सत्य शब्द नहिं खोजई, सो जावे यमद्वार ॥

चौपाई

हम तो घर घर करी पुकारी । विरला हंस कोइ कीन्ह सम्हारी ॥
युग हिंडोला लिये प्रमाणा । सात लाख जिव शब्द समाना ॥
बीता चार पान रे भाई । गगरा सम नरियल तब आई ॥
युग आयुर्बल बरस पचीसा । नर आयुर्बल सत्ताईसा ॥

छंद—दीन्ह लिखि जेहे अंक जीवन ते चले हम साथ हो ॥
ताहि जीवन काल गांसत पांव दे यम माथ हो ॥
सात लाख ले हंस पहुँचो पुरुष चरण मिटाइया ॥
रूप भयो तेहि विषद मंजुल अक्षय तरु फल पाइया ॥

सोरठा—वर्ण मनोहर अङ्ग, अधिक रूप छवि ताहिको ॥
बैठे द्वीप सुरंग, हंस हंस युत्थ जगमगे ॥

इति श्रीअम्बुसागरे हिंडोलयुगकथावर्णनं नाम द्वादशस्तरंगः ।

अथ त्रयोदशस्तरंगः

कंकवत युग कथा

चौपाई

धर्मदास विनती बहु करहीं । सतगुरु चरण शीश ले धरहीं ॥
राउर वचन रवि किरण विपंगा । मम संशय यामिनि करु भंगा ॥
सूझि पर्‌यो प्रभुचरित अनूपा । तुम तो पुरुष एक ही रूपा ॥
ज्ञान कथा मोहि कहु समझाई । सुनत चित्त हिय अति हर्षाई ॥
जीव उबारे काटे बन्दा । होय सच्चिदानँद आनँदकंदा ॥
और कथा कहिये अब सोई । साहब मोहि न राखो गोई ॥
युग लीला कीन्हा जस स्वामी । सो कहिये मोहि अन्तर्यामी ॥

सतगुरु वचन-चौपाई

धर्मदास बूझो मन भावो । सो चरित्र अब वरणि सुनावो ॥
नाम गुप्त मुनि रहा पताला । रूप बनाय बैठे तहँ काला ॥
जीवन काज गुप्त भये नासी । जैसे छिपकर बैठत फांसी ॥
माल जगाय फंद बहु डारी । ऐसी रचना काल पसारी ॥
शब्द रूप आप परकाशा । तब चलि गये गुप्त मुनि पासा ॥

गुप्तमुनि वचन-चौपाई

अंश गुप्त मुनि पूछत बाता । कौन देश तुम कहां रहाता ॥
काकर अंश कहां चलि आये । सो तुम मोहिं कहो सति भाये ॥
इहां गम्य कोइ नहिं लम्भा । तुमैं देखि मोहिं भयो अचम्भा ॥
शब्द सतोतर सत्तहि भाषो । हम सो गोय नहीं कछु राखो ॥
साखी-तबे गुप्त मुनि पूछही, कह समरथ अर्थाय ॥
अंश यहां के नाहिं तुम, कौन देशते आय ॥

ज्ञानी वचन-चौपाई

ज्ञानी कहै गुप्त मुनि वचना । आय पताल देखन तुव रचना ॥

सुनत श्रवण बहु दिना बिताई । तुम ऋषि वर पुरुष पठवाई ॥
सत्य लोकतें हम चल आयो । द्वीप तुम्हार देखन मन लायो ॥
हम तुम एक नाल के आहीं । काहे भूल गये मनमाहीं ॥
पिछली खबर विसर तुम भयऊ । इहवां आय गुप्त मुनि भयऊ ॥
अब तुम मोहि मिलो हितकारी । हम हैं तुम्हरे सिरजन हारी ॥
लेहु पान तुम तजो गुमानो । पुरुष वचन सत्य करि मानो ॥

गुप्तमुनि वचन–चौपाई

सुनत गुप्त मुनि एतिक वानी । बहुत कोप तब मन महँ आनी ॥
कौन मंत्र ले सिरजउ भाई । कौन नाम तुम मोहि धराई ॥
खबर साठ युग की हम जाना । मोसों अधिक कहां है पाना ॥
सत्य वचन तुम भाषहु नागर । तब तुम जाहु यहां ते आगर ॥
हम ते भये बडे तुम ज्ञानी । मोक्ष मुक्ति तुम अंश न जानी ॥
सप्त पताल खबर हम जाना । तुम अस कोटिक फिरहिं भुलाना ॥
प्रलय होय जब धुन्धूकारा । शब्द ख्याल की तरे तुम्हारा ॥
नहिं जलथल जब गगन निवासा । नहिं तब रहे मंदिर कवलासा ॥
सुरमुनिऋषि नहिं सहस अठासी । तब तुम कहां होत हो वासी ॥

साखी–इतने दिन तुम गुप्त थे, उपजा नहीं शरीर ।
उतपति परलय नाहिं थी, तब तुम कहां कबीर ॥

ज्ञानीवचन

आदि अन्त तब ना हता, नाहिं न बोल शरीर ॥
शब्द स्वरूपी बीरवा, तहँ हम वसे कबीर ॥

चौपाई

ज्ञानी कहे गुप्त मुनि बाता । जीव अनेक कीन्ह तुम घाता ॥
कर अब तुम कहँ हम धरि पावा । पकरि बांध यमलोक चलावा ॥
युगयुग साठ कथा अनुसारा । युग असंख्य हमही विस्तारा ॥

हमही लोक कीन्ह मन भावन । षोडश अंश भये तब पावन ॥
इतना कहि अस बोले वाणी । कौन पुरुष तुम कहँ उतपानी ॥
तुम तो मोहिं नाहिं पहिचानी । कहै कबीर बोल अभिमानी ॥

गुप्तमुनि वचन—चौपाई

एतक सुनत कोप चित बाढा । उठ ज्ञानी के सन्मुख ठाढा ॥
नहिं भय भीर राख तेहि बारा । कीन्ह युद्ध बहु भांति अपारा ॥

ज्ञानी वचन—चौपाई

सुर मुनि तेज पुरुष परतापू । काल पछार पांव तर चापू ॥
कालहि मार खंड दो करिया । गहि फेंका यम द्वारे परिया ॥
यम औ दूत देख सब धावा । धनी हमार मारको आवा ॥
मार काल जब कीन्ह विध्वंसन । अपने वद कर लीन्हे हंसन ॥
युग कंकवत आवत अनुसारा । ता दिनका यह कथूं पसारा ॥
पैंतीस लक्ष आयु युग होई । मानुष लक्ष वर्ष जिय सोई ॥
असी हाथ नर केरि उंचाई । ग्यारह हाथ पान लंबाई ॥
हस्ती सम नरियल बन्धाना । युग की कथा कहेउ परमाना ॥

छंद—काल मर्दन कर निकन्दन दूत गंजन कीन्ह हो ॥
आनन्द कन्दन मेटि फन्दन लोक वासा लीन्ह हो ॥
पुरुष के तव दरश कीन्हे चरण वन्दन हिय लहे ॥
तब नाम पद परतापते रिपु जीत विनती अब कहे ॥

सोरठा—पुरुष कर गहि लीन्ह, बैठो ज्ञानी अंश मम ॥
काल निकंदन कीन्ह, हंस काज भल युक्ति कर ॥

इति श्रीअम्बुसागरे कंकवतयुगकथावर्णनो नाम त्रयोदशस्तरंगः ।

अथ चतुर्थस्तरंगः

चारोंयुग कथा वर्णन

धर्मदासवचन–चौपाई

धर्मदास बोले हितकारी। विनय करत चक्षुन चले वारी ॥
विलखत वदन ढरत दोउ नयना। धर धीरज तब बोले वयना ॥
जीवन काज मुक्त भल कीन्हा। मर्दन धर्म रसातल दीन्हा ॥
भयो अधीन काल तेहि बारा। गयो लोक हंसन रखवारा ॥
काल त्रास जीवन सब दाही। धन्य भाग जो तुम्हरी वाही ॥
जो पद गहे रंक अरु भूपा। वायस गति हो हंस अनूपा ॥
तिनकी संगति गंजित कीन्हा। जरा मरण गत हर्षित लीन्हा ॥
पंकज गह पद जीव अनाथू। युग युग बैठहि अमरके साथू ॥
धर्मदास कर जोरे ठाढे। शब्द सुनत हर्षित चित बाढे ॥
अब प्रभु और कहो परभाऊ। चारों युग कर कथा सुनाऊ ॥

सतगुरु वचन

धर्मदास बूझेहु बहु बारा। सो अब कहूं खोल भंडारा ॥
सत्य नाम सत्ययुग हम नामा। जीव उबार पठाये धामा ॥
बहुतक जीव पाय परवाना। जो चीन्हा सो लोक सिधाना ॥
सतयुग आयू सत्रह लाखा। सहस अठाइस जेहियुग भाषा ॥
मानुष आयुबंल वर्ष इक लाखा। इकइस हाथ ऊंच तन भाषा ॥
धर्मदास तुम चित अभिलाषो। दूजा युग त्रेता अब भाषो ॥
नाम मुनीन्दर हंस उबारा। काल शीश के मर्दनहारा ॥
तहां शब्द बहु भांति पुकारा। हंसन खेय उतारेउ पारा ॥
द्वादश लक्ष छानवे हजारा। इतना युग का आयु विचारा ॥
मानुष आयु सहस दश जानी। हाथ चतुर्दश केर प्रमाणी ॥
तीजे द्वापर कहूं बखानी। पुरुष अवाज जीव वरि आनी ॥

करुणा मय नाम धराये। जीव हेतु भवसागर आये॥
घर घर जीवन कहा संदेशा। जो मानो तेहि मिटे कलेशा॥
युग आयुर्बल कहूं विचारा। साठ लाख चौसठ हज्जारा॥
मानुष आयसु सहस प्रमाना। सात हाथ ऊंचा अनुमाना॥
चौथा कलियुग कथा सुनाऊं। जग महँ आय कबीर कहाऊं॥
चार लाख बत्तीस हजारा। ऐते कलियुग आयु प्रसारा॥
बीसंहि सौ नर आयु बखानी। हूँठां हाथ देही परमानी॥
तात मात आगे सुत नासू। कोई दश बीस कोई वर्ष पचासू॥
बहुत होय जिव तुरत विनासू। काहू नाशे गर्भके वासू॥
युग परमाण आयुर्बल गायो। कलियुग आयु कछू नहिं भायो॥
कलियुग भक्ति विरल नर करई। अन्तकाल सुधि जान न परई॥
खबर करे जिव लागे तीरा। सत्य पुरुष का पावे वीरा॥
उलट चाल कलियुग का नाशू। उलटी रहनी गहन परकाशू॥
गुरु सन्मुख सेवा शिष्य करिहैं। मुख पीछे गुरु निन्दा धरि हैं॥
साधुन निन्दा साधू करिहैं। साधु मेटि आप अब धरिहैं॥
साधुन वस्तु साधू ले लेई। नहीं साधू कहँ साधू देई॥
कलियुग साधू बहुत गुमाना। काल पुरुष का मर्म न जाना॥
घट महँ काल वसे हंकारा। कलियुग साधू बिरल सम्भारा॥
साहब चीन्हे घर को जावे। विन चीन्हे भव भटका खावे॥
साहब घट घट साधुन पासा। साधुन करचो नाहिं विश्वासा॥
साधू देख साधु बहु जरई। तातें चौरासी में परई॥
कलियुग साधू मुग्ध बखाना। सत्य ज्ञान विरले पहिचाना॥
हाथ नारियल लिखना पाना। आप गुरू बन जगत बखाना॥
ताहि जन्म यमपुर हो वासू। पकड़ पकड़ यम नावें फांसू॥

---

१ एकसौ वर्ष। २ साढेतीन।

ज्ञान कथै अरु झगरा लावे। कछू झूठ अरु सांच मिलावे ॥
चौका काज साल रम रहे। सत्य गुरूको देखत डहै ॥
दोय चार घर बोधे जाई। पेल गुरु गुरू आप कहाई ॥
वंश नाम नहिं पावे पाना। झूठहि साखी कथा बखाना ॥
चौका बैठ करे बहु शोभा। नारी देख करे बहु लोभा ॥
देखे नारी सुन्दर नैना। ताहि दूर ते मारे सैना ॥
जाहि अपन वद जाने भाई। ताहि प्रसाद देहि अधिकाई ॥
गर्व गुमान महन्त कहावे। भक्ति करन को हरबल धावे ॥
वंश विना जिन भक्ति जु कीन्हा। यम शिर ऊपर दावा दीन्हा ॥
सबको जूठन सब कोई खाई। केतौं खाय मुक्ति नहिं पाई ॥
जाके पार शब्द है सारा। ताहि खोज ना करे लवारा ॥
धर्मदास जिन अंश न बूझा। ताको ज्ञान दृष्टि का सूझा ॥
सूक्ष्म सूक्ष्म पाय प्रसादा। ताकर जन्म गयो बहु वादा ॥
इक छूछा इक पूरा होई। महा प्रसाद लेवतै सोई ॥
छूछे जीव सकल संसारा। पूरे हैं निज वंश तुम्हारा ॥
तिन पारस जब हंसा पावत। कालबली तेहि निकट न आवत ॥
पावे हंस वंश सहिदाना। देखत यम तेहि दूर डराना ॥
शब्द पाय कैसे के जानब। पुरुष नाम वंशहि गहि आनब ॥
शब्द केर पारख इमि करई। वीरा हंस पाय निस्तरई ॥
वीर हंस जाते तर जाई। सोई नाम हंस लव लाई ॥
निःअक्षर वाकी है बाटा। विना वंश नहिं पावे है घाट। ॥
अक्षर है बहुत अनन्ता। निःअक्षर तुम खोजो सन्ता ॥
अक्षर उभय काम नहिं सरई। गह निःतत्त्व वंश चित धरई ॥
यह अक्षर साधू जिन जाना। सो साधू चित हमरे मन माना ॥
और शब्द बहु गहे बनायी। सो साधू चित नाहिं समायी ॥

और शब्द बांधे परतीती । एक नाम बिन यम नहिं जीती ॥
अक्षर एक मोहि कहँपावे । और अक्षर सब ज्ञान बतावे ॥
धर्मदास सुन वचन हमरा । कलियुग साधुन के व्यवहारा ॥
भुक्ति मुक्ति साधू जन करई । कहो मुक्ति कैसे निर्धरई ॥
एक नाम विन मुक्ति न पावे । कोटिन साधू यत्न करावे ॥
सार नाम की नाहिन आशा । कोटिन नाम करे विश्वासा ॥
दया धर्म औरन बतलावे । आपन साधू देख छिपावे ॥
साधू द्वारे तें फिर जायी । साधू रहनि नहीं चित आयी ॥
साधू तें साहिब पहिचानी । अगम पंथ वहि साधु बखानी ॥
कलियुग साधु केर सुन मर्मा । आप बुडे औरन कह धर्मा ॥
देखी उलटी रीति रे भाई । आपन बहे और समझाई ॥
ज्ञान ध्यान देखत जो करई । ताहि देख आपहि जलमरई ॥
देखी देख करे बहु योगू । छीजत काया बाढत रोगू ॥
शब्द हमार छिपाये धरि हैं । करि अनीति बहु जगते डरिहैं ॥
आपन गहि हैं शब्द प्रतापू । सब विसरिहैं मंत्र औ जापू ॥
तुव वसनते सुमिरन पैहैं । शिष शाखाको नहिं वतलैहैं ॥
तिनते जो पूछन ऐहैं । अपनी भक्ति ताहि दृढै हैं ॥
कहिहैं ताहि सुनहु रे भक्ता । करहू मम सेव जो छूटे जगता ॥
वंश नाम ले जगको ठगि हैं । विषय विकारमें बहुविधि लगिहैं ॥
यम दूतन ते करि असनेहू । मम हंसन ते करि हैं द्रोहू ॥
द्रोह करन बहु युक्ति उपैहैं । लहे न दाव बहुत पछितैहैं ॥
लोभ देइ निज सेव दृढायी । चेला चेली बहुत बढ़ायी ॥
पुनि तिन संग कुकर्म सो करिहैं । करि कुकर्म नरकमें परिहैं ॥
जो कोइ हंस शब्द मम गहिहैं । तिनको देखत मनही जरिहैं ॥
साधु महंत बहु भेषा धारी । करिहैं ठगई होय मिथ्याचारी ॥

उद्यम धन्धा कछु न सुहायी। भीख मांग सो पेट भरायी ॥
साधु संत के नाम ते मंगि हैं। करिहैं विषय कालमग पगिहैं ॥
साधु संत को देखत द्वारे। धरि हैं द्वेष मनहिं मन भारे ॥
जो कोइ मम शब्द परगटे हैं। तिन संग सो रार बढे हैं ॥
अस साधु महंतन की करनी। केतिक सुनाऊं तोही बरनी ॥
अम्बू सागर तुम सन भाषा। समझ बूझ तुम दिल महँ राखा ॥
धर्मदास जिन जानहु ज्ञाना। कलियुग केर चरित्र बखाना ॥
कहूं पुकार चेत रे भाई। ना चेतै मम का बिगराई ॥
चेतै हंस आय है द्वारा। नहिं चेतै तेहि काल अहारा ॥
घर घर फिरि बोलत ललकारी। करे महंती दम्भ पसारी ॥
वंश नाम नाहि न हित जानी। आपन आपन मता बखानी ॥
ममता है जहँ तहँ कलि ब्यापू। नहिं ममता तहँ साहब आपू ॥
ममता मोह दूर कर डारै। सतगुरु वचन सत्य उर धारै ॥
आज्ञा मानैं लगे जिव तीरू। रटत कहे हम सत्य कबीरू ॥
पुरुष निरन्तर खोजो भाई। घट भीतर रह काल समाई ॥
काहू खोजन खोजत पावा। काहू खोजत जन्म गमावा ॥
काहू खोजत खोजत भयऊ। बहुतक खोज खोज मर गयऊ ॥
कलियुग भक्ति कठिन बहुताई। उलटि पलटिके पंथ नशाई ॥
कलियुग जीव चतुर ते नाशू। शब्द हमार न कर विश्वाशू ॥

छंद–कालचरित अपार धर्म न जीव कहा न मानी है ॥
बार बार पुकार सबसों सत्य भक्ति न ठानि है ॥
यही कठिन कराल विकट यम तेहि अति बली ॥
वचन हिय नहिं सत्य धारे जीव यमगहि दलमली ॥

सोरठा–करब लोक अब वास, पुरुष चरण उर भेंट अब ॥
हंसन हंस विलास, कलियुग पग नहिं धारऊँ ॥

धर्मदास वचन—चौपाई

धर्मदास संशय चित आवा। बार अनेक विनय प्रभु लावा॥
का अपराध जीव कलि कीन्हा। जाते तुम दर्शन नहिं दीन्हा॥
युग युग आये जीवन काजा। अब कस त्रास कीन्ह यमराजा॥
यम अन्तरघट घट सब फांसी। जीवन अचेत कीन्ह इमि गांसी॥
महा अधम पातक भर पूरा। शब्द तुम्हार होय अघ दूरा॥
पुरुष नाम राव कौन प्रकाशा। जो नहिं कर्म तिमिरकहँ नाशा॥

छन्द—तुम पद पराग अघ पुंज दाहन हंस सतमन धारनं॥
पतित पावन नाम ध्यावन हंस किमि यम पावनं॥
हंस नायक जिव सहायक अधम जिव पद पंकज गहे॥
युग अनन्त न हंस लावहु काल कलि जिव किमि कहे॥

सोरठा—युग असरूय में आय, पुरुष लीला धारिके॥
ऐसे हंस बचाय, उपेक्ष कर्म कहि कि म कहे॥

सतगुरुवचन—चौपाई

धर्मदास तुम हंस नरेशा। सत्य पुरुष का कहुँ सन्देशा॥
कलियुग काल बहुत बरिआरा। तातें पुरुष वचन अनुसारा॥
पुरुष अवाज भई जग जानी। सुनो अंश तेहि कहूँ बखानी॥
चार गुरू हैं जग कडिहारा। सुकृती अंश आदि अधिकारा॥
बंकेज चतुर्भुज औ सहतेजी। सुकृती जग महँ चौथे भेजी॥
जग महँ नाम होहिं धर्मदासू। जीवन ले राखे सुख वासू॥
अंश बयालिस हमरे आगर। जीवनकाज जाहिं भवसागर॥
धर्मदास के प्रगटे जाई। नाम चूरामणि आप धराई॥
तिनके हाथ शब्द टकसारा। पुरुष नाम दे हंस उबारा॥
कलियुग यही नाम प्रतापू। पहुँचे लोक मिटे सन्तापू॥
वंश बयालिस जग कडिहारा। देहि दान जिव उतरहिं पारा॥

छंद–करुणा रमण चित देखि दाया अचर वानी बोलेऊ ॥
जाहु ज्ञानी कीन्ह आयसु जिवन बन्धन खोलेऊ ॥
आय धर्महि मार ततक्षण कौल मह सों कीन्हिया ॥
वंश हाथन पान पावन ताहि हम नहिं लीन्हिया ॥
सोरठा–कौल कीन्ह धर्मराय, पुरुष दीन्हेउ बंश को ॥
काल पान जिय पाय, सो पहुँचे सुख सिन्धु कहँ ॥

धर्मदास वेचन–चौपाई

सुनतहि धर्मदास हरषाने । सतगुरु चरण धाय लपटाने ॥
वचन तुम्हार हिये हम धारा । चूरामणि है अंश तुम्हारा ॥
और कहो प्रभु दीन दयाला । हंसन नायक करो निहाला ॥
नागर वेलि कहँवां तें कीन्हा । जाय अंक पुरुष कहँ दीन्हा ॥
ताकी आदि कहो मोहिं स्वामी । कृपा करो प्रभु अन्तर्यामी ॥

सतगुरु वचन–चौपाई

तुम तो बूझ कीन्ह बड अंशा । तुम्हरे चित का मेटूं संशा ॥
नागवेलिका भेद बताऊं । अंक देय हंसन मुक्ताऊं ॥
कूर्म पीठ पर वेलि रहाया । तहँ ते नागवेलि हम लाया ॥
ताकर मूल दीन्ह संसारा । तुमसों धर्मनि कहूँ विचारा ॥

साखी–एक पान बरई का, हाटहि हाट बिकाय ॥
एक पान सतगुरु का, अमर लोक ले जाय ॥

धर्मदास तब भये सुनाथा । साहब चरण नवायो माथा ॥
अगम कथा भाष्यों प्रभुराई । दीन पयाल हंस मुक्ताई ॥

छन्द–धर्मदास कर जोरि कह मोहि पतित पावन कर लहै ॥
गदगद गिरा अतिपुलक सादर प्रेम वश पंकज गहै ॥

तुम वचन सुधा तड़ाग निर्मल ताहि बिच मन मीन हो ॥
सब जीव यह अज्ञान कर्मी मोह वश नहिं लीन हो ॥

सोरठा–युग युग भवन सिधाय, आर्य लोक जिव लेगये ॥
कलियुग पन्थ चलाय, हंसन मग अब भाषिये ॥

सतगुरुवचन–चौपाई

हंसन पग बूझो धर्मदासू । जो जिव पदगह होय निराशू ॥
तन मन धन हिय मोह न राखे । सदा लीन अस्तुति चित भाखे ॥
हंस चाल रहें सदा अनन्दा । सो जिव बांचे यमके फन्दा ॥
गुरुमुख निशिदिन आज्ञाकारी । निंदारूप न चित्त विचारी ॥
गुरु निंदा क्षण इक चित व्यापू । ताकहँ काल करे बड़ दापू ॥
हर्ष शोक चित नाहिन आवत । सदा लीन गुरु सुरति समावत ॥
जस चकोर चन्दहि चित लावत । न कहुं सुरति न है बिसरावत ॥
जैसे पंकज सर रह बासा । निशि बीते रवि उगै अकाशा ॥
दरश देख पंकज विकसाना । ऐसे हंस वंश चित आना ॥
सत गुरु नेह जाहि चित आई । पाय अंक हिय सांच बसाई ॥
धर्मदास मोकहँ जिमि पावा । तज धन धाम सकल बिसरावा ॥
ऐसे संत वंश गहि चरणा । छूटे ताहि जरा औ मरना ॥
एतक हंस वंश सहिदानी । धर्मदास मैं कहूँ बखानी ॥
ताकहि यम छूवें नहिं पायी । गहि पद वंश लोक जिव जायी ॥
आर्य लोकमहँ जगमग ज्योती । हीरालाल लाग जहँ मोती ॥
श्वेत हंस बैठे जहँ पांती । कंचन खम्भ बने बहु भांती ॥
पुरुष डोरि हंसा चढ पावे । जीवन जन्म ताहि मिटि जावे ॥
सुरति अचिन्त है नाम हमारा । जिन्हें जान जिव उतरे पारा ॥
मूल वस्तु हम दीन्ह बतायी । जाते हंस नष्ट नहिं जायी ॥

पुरुष रूप बरनो अति पावन । एक चिकुर रवि कोट लजावन ॥
हंस रूप शोभा बहु भांती । षोडश भानु हंस की क्रान्ती ॥
मुक्त अमर मन जहवां वासा । दर्शन पाय होत अघ नाशा ॥
ऐसे घर साधुन वर कीन्हा । पहुँचे लोक वंश जिन चीन्हा ॥
आदि अन्त सागर मय भाषा । अम्बू चाख सुरति जिमि राखा ॥
भवनिधि उतर पार जिव जायी । यम शिर पांव देय घर आयी ॥

छंद–अम्बु सागर ग्रन्थ में जहँ कमल बखानियां ॥
सोरठा कंमोद फूले वार अति चौपाइयां ॥
यह कथा पावन अति सुहावन अमी सर वर्णन करों ॥
जेहि करहु मज्जन सन्त सज्जन अर्थवीची चित धरो ॥

सोरठा–खण्ड मनोहर घाट, साखी सिढियां लाइये ॥
चले हंस यह बाट, सुख सागर सुख सों लहे ॥

इति श्रीअम्बुसागरे चारोंयुग कथा वर्णनो नाम चतुर्दशस्तरंगः ।

इति समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।

उपसंहार

सोरठा–अम्बुसागर ग्रन्थ भो पूर, बूझो संत विवेक करि ॥
शब्द परखे सो शूर, परखि शब्द सत पद गहे ॥

चौपाई

काल चरित बहु अगम अपारा । भांति २ जग शब्द पसारा ॥
दुख छुडावन कहँ ललचावे । ललचनि जीवहि फंद लगावे ॥
पहले कहे सुकृत की बातू । पीछे लावे आवन घातू ॥
पहले दिखावे भक्ति औ मुकती । पीछे लगावे आपनि युकती ॥
यह सब जानो यम कीं बाजी । जेहिमा भूले पण्डित काजी ॥

देह लोभ सब जीव फँसावे। आपन महिमा करि भक्ति बढावे॥
कहँ लगि कहौं कालकी रचना। एकहि एक मिले नहिं बचना॥
पक्षपात लगाइ जीव बिगोवे। सत्य पद छूटि नरक सो जोवे॥
याते गुरु पारख बिस्तारा। जेहि पाये जिव होयहि न्यारा॥
हंस होउ अपने पद जोवे। सत्य गुरू के शरण सु होवे॥

दोहा—परखो संतो शब्द को, त्रिविधि भेद विचार॥
काल संधि झाईं लखी, पावो शब्द मति सार॥
दोउ प्रकार पारख करो, बानी खानि विचार॥
गुरु पद तब पाइहो, रहै न भ्रम लगार॥
भ्रम छुटे जब जीवका, उभय अनन्द सो पाय॥
काल देशते निकसिके, सत्य लोक को जाय॥

इति